A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 21 नवंबर, 2023

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 48 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

तेलंगाना : बीजेपी के घोषणा पत्र में ओबीसी पर जोर क्यों?

पल्लव मिश्रा

कांग्रेस की गारंटी और केसीआर (बीआरएस) भरोसा के बाद, भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिए अपना घोषणापत्र 'सकला जनुला सौभाग्य तेलंगाना - पीएम मोदी की गारंटी' के नाम से जारी किया है, जिसमें लगभग 25 मुद्दों को मुख्य रूप से 10 व्यापक विशेषताओं में बांटा गया है।

इस आर्टिकल में हम तीन सवालों के जवाब देगें-

BJP के घोषणा पत्र के क्या मायने

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा जारी 48 पन्नों के मेनिफेस्टो में बीजेपी ने किसानों, महिलाओं, युवाओं पर विशेष फोकस किया है। साथ ही जातीय समीकरण को साधने के लिए ओबीसी और SC/ST को भी लुभाने की कोशिश की है। पार्टी ने भ्रष्टाचार को लेकर एक बार जीरो टॉलरेंस की नीति पर जोर दिया है। इसके अलावा बीजेपी ने मुफ्त की योजनाओं से भी वोटर्स को आकर्षित करने की रणनीति बनाई है।

किसानों से वादाः बीजेपी का घोषणापत्र किसान-समर्थक उपायों की बात करता है, जिसमें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को मुफ्त बीमा, किसानों को प्रति एकड़ 2,500 रुपये की सहायता शामिल है। पार्टी ने धान 3100 रुपये प्रति क्विंटल खरीद और किसानों को मुफ्त में देसी गाय देने का भी वादा किया।

महिला वोटर्स पर जोरः महिला स्वयं सहायता समूहों को 1 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण, बेटी के जन्म पर 2 लाख रुपये की फिक्स डिपॉजिट, महिलाओं को प्रति वर्ष चार मुफ्त घरेलू एलपीजी सिलेंडर और डिग्री एवं प्रोफेशनल कॉलेजों में छात्राओं को मुफ्त लैपटॉप देने की घोषणा की।

युवा वोटर्स पर ध्यानः पार्टी ने दावा किया कि 5 साल में 2.5 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी और TSPSC के माध्यम से समय से ग्रुप- ए और ग्रुप-बी लेवल की परीक्षाएं होंगी।

महंगाई कंट्रोल करने पर जोरः बीजेपी ने ऐलान किया कि सरकार बनने पर 7 दिन के अंदर पेट्रोल-डीजल पर VAT कम करेंगे। वहीं, पात्र परिवारों को सरकारी और निजी अस्पतालों में 10 लाख तक का मुफ्त इलाज मिलेगा। तेलंगाना के वरिष्ठ नागरिकों को मुफ्त में अयोध्या दर्शन का वादा किया गया तो, हर साल 17 सितंबर को हैदराबाद मुक्ति दिवस और 27 अगस्त को रजाकार विभीषिका स्मृति दिवस मनाएंगे की घोषणा की।

पूरे देश में UCC लागू करना बीजेपी का मुख्य एजेंडा पहले से रहा है। लेकिन उत्तराखंड की तरह तेलंगाना में भी बीजेपी ने दावा किया कि सरकार बनने पर 6 महीने के भीतर राज्य में समान नागरिक संहिता (UCC) लागू करेंगे।

बीजेपी ने घोषणा पत्र में भी साफ संकेत दिया कि ओबीसी और SC/ST उसकी प्राथमिकता में सर्वोच्च स्थान रखते हैं. अमित शाह ने ऐलान किया कि अगर तेलंगाना में बीजेपी की सरकार आती है तो राज्य का अगला मुख्यमंत्री पिछड़ा वर्ग से ही बनाया जाएगा।

दरअसल, बीजेपी का राज्य में मुख्य वोट बैंक पिछड़ा वर्ग है। जानकारी के अनुसार, राज्य में ओबीसी मतदाताओं की संख्या 50% से ज्यादा है जबकि अल्पसंख्यकों की आबादी 14% है। ओबीसी में मुन्नरकापू और रेड्डी की संख्या सबसे ज्यादा है। इसके अलावा केसीआर की स्वजातीय वेमला बिरादरी भी प्रभावशाली हैं।

जानकारों की मानें तो बीजेपी पहले से ही तेलंगाना के जातीय समीकरण को साधने के लिए कई ऐलान कर चुकी है। जैसे- पार्टी ने केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी को प्रदेश अध्यक्ष, ईटेला राजेंदर को चुनाव प्रबंधन समिति प्रमुख और संजय बंदी (मुन्नरकापू) को राष्ट्रीय महामंत्री बनाकर जातीय समीकरण को बैलेंस करने की कोशिश की है।

जानकारी के मुताबिक, ईटेला राजेंदर पिछड़ी जाति से आते हैं और उनकी जातीय वोट बैंक का 53 फीसदी हिस्सा है जबकि रेड्डी की जातीय का लगभग 5 फीसदी वोट है। बाकी 10-11 फीसदी कापू हैं, जिनका प्रतिनिधित्व बंदी और अरविंद धर्मपुरी जैसे अन्य नेता करते हैं।

बीजेपी ने मुसलमानों को दिए गए 4% आरक्षण को खत्म कर और पिछड़ा वर्ग, एससी/एसटी का कोटा बढ़ाने का भी ऐलान किया है, जैसा कर्नाटक चुनाव के दौरान घोषणा की गई थी कि मुस्लिमों को मिलने वाला 4% आरक्षण का कोटा 2%-2% लिंगायत और वोक्कालिगा को दिया जाएगा। हालांकि, चुनाव में बीजेपी को इसका काफी नुकसान हुआ।

भ्रष्टाचार पर नीति साफः घोषणा-पत्र में कहा गया कि सत्ता में आने पर कालेस्वरम और धरणी घोटालों और मौजूदा बीआरएस सरकार की ओर से की गई अन्य वित्तीय अनियमितताओं सहित भ्रष्टाचार के सभी आरोपों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के रिटायर जज की अध्यक्षता में एक जांच आयोग नियुक्त करेगी। इसके अलावा रजाकारों और निजामों के खिलाफ तेलंगाना के लोगों के बहादुर संघर्ष का दस्तावेजीकरण करने के लिए हैदराबाद में एक संग्रहालय और एक स्मारक बनाने का वादा किया।

कुल मिलाकर कर देखें तो बीजेपी ने सभी वर्गों के लिए अपने पिटारे से कुछ न कुछ ऐलान किया है। हालांकि, बीजेपी ने एक बार फिर राज्य के 'कैप्टन' के लिए कोई नाम का ऐलान नहीं किया, लेकिन ये जरूर कह दिया की जो भी वादा किया गया है वो 'मोदी की गारंटी' है और पार्टी उसी चेहरे के भरोसे चुनाव में जाएगी।

कांग्रेस ने भी किसानों के लिए पिटारा खोला है और दावा किया है कि सत्ता में आने पर उन्हें हर साल 15,000 रुपए तो खेतीहर मजदूरों को 12,000 रुपए मिलेंगे। युवाओं को रोजगार के लिए 2 लाख सरकारी नौकरी देने की बात कही है। इसके अलावा 'चेयुथा' योजना के तहत रोगियों को प्रति माह 4,000 रू. की पेंशन देने का ऐलान किया है।

बीजेपी की तरह कांग्रेस ने भी रू. 10 लाख का स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है। बीजेपी ने पात्र परिवारों को सरकारी और निजी अस्पतालों में 10 लाख तक का मुफ्त इलाज कराने का वादा किया है।

अब तीनों पार्टी के घोषणा पत्र आ चुके हैं। बीआरएस दस साल से सत्ता पर काबिज है तो वहीं, कांग्रेस इस बार बीआरएस को कड़ी चुनौती देती दिख रही है। हालांकि, तमाम सर्वे और ओपिनियन पोल भले ही राज्य में बीजेपी की स्थिति को मजबूत नहीं बता रहे हैं, लेकिन पार्टी ने अपने सबसे ताकतवर 'सिपाही' अमित शाह की मौजदूगी में घोषणा पत्र जारी कर साफ संकेत दिया कि दक्षिण राज्य उसकी प्राथमिकता में कितना महत्व रखता है और बीजेपी यहां अपने पैर मजबूती से गड़ाने के लिए तैयार है।

हालांकि, बीजेपी की सबसे बड़ी चुनौती ग्रामीण वोटर्स से हैं क्योंकि तेलंगाना की 119 सीटों में से ज्यादातर सीटों ग्रामीण क्षेत्र में हैं और बीजेपी का शहरी और अर्ध शहरी क्षेत्र में प्रभाव लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में वो अभी भी अपने पांव नहीं पसार पाई है।

(दि क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

राजस्थान में कांग्रेस के लिए भ्रष्टाचार से बड़ा कुछ नहीं

● पाली में गरजे मोदी, कहा-यहां कांग्रेस को सबक सिखाना बेहद जरूरी ● कहा-केंद्र सरकार ने मोबाइल पर हर महीने 5 हजार रुपए का खर्च बचाया

पाली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजस्थान में चुनावी दौरा जारी है। प्रधानमंत्री पाली के जाडन में सभा को संबोधित कर मोदी ने कहा कि राजस्थान में महिला अत्याचार बढ़ा है और यहां के मुख्यमंत्री सर्टिफिकेट देते हैं कि वे फर्जी शिकायत दर्ज करवाती हैं। यह महिलाओं का अपमान है। मोदी ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार ने आपके मोबाइल का बिल भी कम कर दिया है। डेटा की 2014 से पहले की कीमत होती तो आज आप जितना डेटा खर्च कर रहे हैं तो आपको एक मोबाइल पर कम से कम 5 हजार रुपए अधिक खर्च करने पड़ते। एक परिवार में कम से कम 4 मोबाइल होते हैं, मोदी ने यह खर्चा बचाया है। राजस्थान में कांग्रेस के लिए भ्रष्टाचार से बड़ा कुछ नहीं है। कांग्रेस के लिए परिवारवाद ही सब कुछ है। उसके पास तुष्टीकरण के अलावा कुछ नहीं है। दंगाइयों और आतंकियों के हौंसले बुलंद हो गए। ऐसी विकृत वाली मानसिकता वाली कांग्रेस को अच्छे से सबक सिखाना जरूरी है। कांग्रेस और उसके घमंडिया गठबंधन की यह पहली हरकत नहीं है। सनातन को लेकर उन्होंने क्या-क्या कहा, यह सबने देखा है। कांग्रेस और उसके साथी सनातन को खत्म करने का ऐलान कर रहे हैं। सनातन को खत्म करने का मतलब है, राजस्थान की संस्कृति को खत्म करना। महिलाओं और दलितों को लेकर कांग्रेस और इनके गठबंधन के नेता कैसी-कैसी भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं। बिहार के नेता ने पूर्व मुख्यमंत्री अति पिछड़े दलित परिवार से आते हैं, इसलिए उनकी बेज्जति करने में उन्हें आनंद आता है। उन्होंने पाप किया, लेकिन कांग्रेस ने इसे गलत बताने का विवेक नहीं दिखाया। राजस्थान में दलित परिवारों पर अत्याचार पर कांग्रेस ने यही किया है।

बीजेपी को वोट दिया तो एमपी की तरह पछताओगे

प्रियंका गांधी बोलीं-यह सिर्फ हिन्दुस्तान-पकिस्तान करते हैं

केकड़ी (एजेंसी)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी राजस्थान में बीजेपी के सीएम के चेहरे को लेकर लगातार हमलावर बनी हुई है। इस दौरान प्रियंका गांधी ने सोमवार को वसुंधरा का नाम लिए बगैर उनके प्रति अपनी हमदर्दी जताई। प्रियंका गांधी ने राजस्थान की केकड़ी विधानसभा में प्रत्याशी रघु शर्मा के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित किया। इस सभा में भी प्रियंका गांधी पीएम नरेंद्र मोदी को जमकर घेरती हुई नजर आई। उन्होंने लोगों से अपील की है कि जनता सोच समझकर आकलन करें, कि किस सरकार ने उन्हें राहत दी है और किस सरकार ने उन्हें नुकसान। आपकी एक बड़ी गलती आने वाले 5 सालों में बड़ा नुकसान कर सकती है। प्रियंका गांधी ने अपनी भाषण की शुरुआत ठेठ राजस्थानी भाषा में 'घणी राम राम सा' कहकर शुरुआत की। इस दौरान ग्रामीण लोगों से प्रियंका गांधी ने पूछा कि कस्यान छो। ऐसा सुनकर जनसभा में उपस्थित लोगों ने जमकर तालियां बजाई। प्रियंका गांधी ने अपने भाषण की शुरुआत पीएम मोदी को घेरते हुए शुरू की। उन्होंने कहा कि मोदी जी राजस्थान में लगातार जो भाषण दे रहे हैं। उनमें जो आरोप और बातें कर रहे हैं। उनका मैंने आंकलन किया तो, मुझे महसूस हुआ सब गलत है।

अर्घ्य देकर लौट रहे 6 लोगों पर फायरिंग...3 की मौत

2 भाई 1 बहन ने तोड़ा दम, पिता-दो बहू घायल, बेटी के प्रेमी ने बरसाईं गोलियां

लखीसराय (एजेंसी)। बिहार के लखीसराय में सोमवार सुबह छठ का अर्घ्य देकर लौट रहे परिवार पर ताबड़तोड़ फायरिंग हुई है। परिवार के लोग पूजा करने के बाद घाट से घर लौट रहे थे। घर से थोड़ी ही दूरी पर 6 लोगों को गोली मारी गई है। फायरिंग में दो भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई है। वहीं बहन ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। मृतकों की पहचान शशि भूषण के बेटे चंदन कुमार और राजनंदन कुमार के रूप में हुई है। बेटी दुर्गा कुमारी की पटना में मौत हुई। घायलों में दो बहू लवली कुमारी, प्रीति कुमारी, और पिता शशि भूषण कुमार शामिल हैं। सभी घायलों को बेगूसराय सदर अस्पताल से पटना रेफर कर दिया गया है। घटना जिले के कवैया थाना इलाके के पंजाबी मोहल्ला की है। प्रेम-प्रसंग में मृतकों के घर के सामने ही रहने वाले आशीष चौधरी ने गोली मारी है। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गया है। वहीं पुलिस ने मौके से हत्या में इस्तेमाल पिस्टल जब्त कर ली है। लड़की की भाभी ने बताया कि पहले से ही इन दोनों के बीच प्रेम-प्रसंग था। इसी को लेकर घटना को अंजाम दिया गया है। आशीष चौधरी मेरी ननद से जबरदस्ती शादी करना चाहता था। लखीसराय पहुंचे मुंगेर डीआईजी संजय कुमार ने घटनास्थल का लिया जायजा। उन्होंने बताया कि प्रेम प्रसंग में वारदात को अंजाम दिया गया है। डीआईजी के मुताबिक, राजनंदन झा और चंदन झा की गोलीबारी में मौत हुई है।

भारतीयों के लिए वीजा-फ्री एंट्री शुरू कर सकता है वियतनाम

अभी ई-वीजा लेना पड़ता है, इससे पहले श्रीलंका-थाईलैंड ने बिना वीजा एंट्री शुरू की थी

हनोई (एजेंसी)। श्रीलंका और थाईलैंड के बाद वियतनाम भी भारत के ट्रैवलर्स के लिए वीजा फ्री एंट्री शुरू कर सकता है। अभी जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्पेन, डेनमार्क, स्वीडन और फिनलैंड जैसे देशों के नागरिक बिना वीजा के वियतनाम में प्रवेश कर सकते हैं। लोकल न्यूज एजेंसी वीएनएक्सप्रेस के अनुसार, वियतनाम के संस्कृति, खेल और पर्यटन मंत्री गुयेन वान हंग ने पर्यटन में सुधार लाने के लिए चीन और भारत जैसे प्रमुख बाजारों के लिए शॉर्ट टर्म वीजा वेवर देने को कहा है। अगस्त के मध्य से, वियतनाम ने सभी देशों के लोगों के लिए ई-वीजा जारी करना शुरू किया है।

इस साल के पहले दस महीनों में, वियतनाम में लगभग 1 करोड़ इंटरनेशनल विजिटर आए, जो 2022 की इसी अवधि की तुलना में 4.6 गुना ज्यादा है। वियतनाम के फुक्वोक आइलैंड, न्हा ट्रांग, दा नांग, हा लॉन्ग बे और होई एन जैसे डेस्टीनेशन भारतीय पर्यटकों के बीच पॉपुलर हैं। भारत से वियतनाम के लिए वियतजेट अपनी फ्लाइट ऑपरेट करता है।

14-15 हजार रुपए में राउंड ट्रिप टिकट मिल जाता है। इससे पहले अपनी इकोनॉमी को बूस्ट देने के लिए थाईलैंड ने भारत और ताइवान के नागरिकों के लिए वीजा फ्री एंट्री का ऐलान किया था। भारतीय 10 नवंबर, 2023 से 10 मई, 2024 तक बिना वीजा के थाईलैंड जा सकते हैं और 30 दिनों तक वहां रह सकते हैं। टूरिज्म सीजन से ठीक पहले लिए गए इस फैसले से थाईलैंड को ज्यादा पर्यटकों के आने की उम्मीद है। थाई सरकार के प्रवक्ता चाई वाचरोन्के ने कहा कि इस स्कीम से 14 लाख अतिरिक्त पर्यटकों के आने की उम्मीद है।

भोपाल में इस सप्ताह ठंडा-गर्म रहेगा मौसम

● 26 नवंबर को बारिश होने का अंदेशा, बादल छाएंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल में इस सप्ताह मौसम का मिजाज ठंडा-गर्म रहेगा। रात में गुलाबी ठंड रहेगी तो दिन में बादल छाए रहेंगे। 26 नवंबर को बारिश भी हो सकती है। मौसम वैज्ञानिकों की माने तो 28 नवंबर के बाद ही ठंड का असर बढ़ेगा।

राजधानी में पिछले दो दिन से मौसम बदला हुआ है। शनिवार को हवा थम गई थी। दिन में बादल छा गए। इससे दिन में हल्की सर्दी रही। हालांकि, रात में पारे में ज्यादा उछाल नहीं आया। न्यूनतम तापमान 15.8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। रविवार को सुबह से गर्मी का अहसास देखने को मिला, लेकिन शाम को मौसम में ठंडक रही।

आगे ऐसा रहेगा मौसम- सोमवार को बादल छाए रहेंगे। फिर 21-22 नवंबर को तेज धूप निकलेगी। 23 नवंबर को फिर बादल छाने का अनुमान है। मौसम विभाग ने 26 नवंबर को हल्की बारिश होने की संभावना भी जताई है।

इसलिए बदला मौसम का मिजाज- बंगाल की खाड़ी से 'मिधिली' तूफान उठा है। इससे बादल छाए हुए हैं। वहीं, प्रदेश में 24-25 नवंबर को उत्तर भारत में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोप) के एक्टिव होने से मध्यप्रदेश में भी मौसम बदलेगा। इससे बारिश होने का अनुमान भी है।

सुप्रभात

जब हम किसी के
विचारों के दास हो जाते हैं
मरने लगते हैं

जब हम अपने से ही
प्रश्न पूछना बंद कर देते हैं
मरने लगते हैं

जब हम नये नये
सपने देखना बंद कर देते हैं
मरने लगते हैं

जब हम दुनिया के
आघातों पर प्रतिघात करना
बंद कर देते हैं
मरने लगते हैं

जब हम पेड़-पौधों-फूलों से
संवाद करना बंद कर देते हैं
मरने लगते हैं।

- दुर्गाप्रसाद झाला

यूएफओ खोजने के लिए वायुसेना ने लगाए थे राफेल फाइटर

इंफाल एयरपोर्ट की सूचना पर एयर डिफेंस सिस्टम भी ऐक्टिवेट किए

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंफाल में अनआइडेंटिफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट (यूएफओ) दिखने के बाद वायुसेना ने इनका पता लगाने के लिए 2 राफेल फाइटर प्लेन लगाए थे। इसके अलावा अपने एयर डिफेंस सिस्टम को भी फौरन एक्टिवेट कर दिया था। हालांकि, अब तक की जांच में वायुसेना को कुछ हाथ नहीं लगा। न्यूज एजेंसी एएनआई ने रक्षा सूत्रों के हवाले से बताया, एयरपोर्ट से सूचना मिलने के बाद वायुसेना की ईस्टर्न कमांड ने ये राफेल भेजे थे। हमें आसमान में कहीं भी कोई ऑब्जेक्ट नहीं दिखा। राफेल फाइटर प्लेन की पश्चिम बंगाल के हाशीमारा एयरबेस पर तैनाती की गई है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 21 नवम्बर 2023

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब टनल में फंसे 41 लोगों के लिए जीवन तलाशेगा 'दक्ष'

डीआरडीओ का रोबोट हुआ ऐक्टिव, टनल के अंदर रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के सिलक्यारा में टनल में फंसे लोगों की जान बचान को रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। पिछले 9 दिनों से टनल के अंदर फंसे 41 लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए बचाव दल के सभी प्लान फेल हो चुका है। ऐसे में अब बचाव दल ने 'रोबोट' का सहारा लेने का मन बना लिया है। डीआरडीओ के 'दक्ष' रोबोट से टनल के अंदर जीवन तलाशने की कोशिश की जाएगी। रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटे अधिकारियों का

कहना था कि टनल के अंदर मलबे के ऊपरी भाग की ओर से जांच की जाएगी। जांच के बाद और टनल के अंदर तक स्थिति का पूरा जायाजा लेने के बाद ही आगे की रणनीति बनाई जाएगी। विदित हो कि टनल के अंदर फेसे लोगों को बाहर निकालने के लिए रेस्क्यू टीम कई प्लान पर काम कर रही है। लेकिन, चिंता की बात है कि पिछले 9 दिनों से बचाव दल के हाथ विफलता ही लगी है। दूसरी ओर, सूत्रों की बात मानें तो टनल के अंदर फंसे लोगों की तबीयत भी खराब हो रही है। टनल में खुदाई करने के साथ ही रेस्क्यू ऑपरेशन लगातार जारी है।

पिनाका के बाद अब आर्मीनिया में गरजेगी भारत की तोप

पाकिस्तान और तुर्की का होगा हाजमा खराब, सीने में दर्द की आशंका

येरेवान (एजेंसी)। अजरबैजान, पाकिस्तान और तुर्की की खतरनाक तिकड़ी का सामना कर रहे आर्मीनिया की मदद के लिए अब भारत ने हथियारों का जखीरा खोल दिया है। खबरों के मुताबिक पिनाका रॉकेट सिस्टम के बाद अब भारत आर्मीनिया को एमकेआई 155 एमएम स्वचालित तोप की सप्लाई करने जा रहा है। इस तोप को भारत की रक्षा कंपनी भारत फोर्ज कल्याणी ग्रुप ने

पुष्टि की है कि उसे आर्मीनिया से बड़ा ऑर्डर मिला है। इसके अलावा एमकेआई 155एमएम तोप की भी आपूर्ति आर्मीनिया को की जाएगी। भारत और आर्मीनिया में यह तोप समझौता दोनों देशों के बीच रक्षा समझौता में बड़ा कदम माना जा रहा है। दरअसल, आर्मीनिया ने अजरबैजान के हाथों नागर्नो कराबाख को गंवा दिया है और अब उसे अपने इलाके पर भी अजरबैजान के हमले का खतरा मंडरा रहा है। उधर, अजरबैजान लगातार तुर्की और पाक हथियारों की मदद से आर्मीनिया को धमकाने में जुटा हुआ है।

अपनी डिफेंस फोर्स अब होगी और ताकतवर

देश में ही बनेंगे एलसीए मार्क-2 और एएमसीए लड़ाकू विमानों के इंजन

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के डिफेंस सेक्टर को बड़ा बूस्ट मिलने जा रहा है। एलसीए मार्क 2 और इंडिजिनस एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए) के पहले 2 स्क्वाड्रन के इंजनों का घरेलू स्तर पर प्रोडक्शन किया जाएगा। डीआरडीओ प्रमुख डॉ. समीर वी कामत ने शनिवार को यह जानकारी दी। समीर ने कहा, एलसीए मार्क 2 के इंजन और एएमसीसी के पहले दो स्क्वाड्रन का उत्पादन अमेरिकी जीआई और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

की ओर से देश के भीतर एक साथ होगा। इसे लेकर सभी जरूरी मंजूरियां अमेरिका से मिल गई हैं। हाल और यूएस की जीई देश में संयुक्त रूप से इन इंजनों का उत्पादन करेंगे। 30 अगस्त को सुरक्षा पर कैबिनेट समिति ने एलसीए मार्क 2 लड़ाकू विमान के डेवलपमेंट को लेकर मंजूरी दी, जो भारतीय वायु सेना में मिराज 2000, जगुआर और मिग-29 लड़ाकू विमानों की जगह लेंगे। एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी के चीफ गिरीश देवधरे ने कहा, एलसीए मार्क 2 फाइटर एयरक्राफ्ट डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को सरकार से मंजूरी मिली है। इससे डिजाइनर्स के लिए एडवांस्ड 17.5 टन सिंगल-इंजन विमान बनाने का रास्ता साफ होगा।

आंखों में आंसू, टूटे हुए थे दिल...

कमरे में जाकर पीएम मोदी ने टीम इंडिया को दी हिम्मत

● हार से निराश खिलाड़ियों का बढ़ाया हौंसला, भविष्य के लिए किया प्रेरित

अहमदाबाद (एजेंसी)। वर्ल्ड कप 2023 के फाइनल में मिली हार भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी और फैंस के लिए किसी सदमे से कम नहीं है। 43वें ओवर की आखिरी गेंद पर ग्लेन मैक्सवेल के दो रन लेते ही करोड़ों भारतीयों का सपना टूट गया। हार के बाद भारतीय खिलाड़ियों के चेहरे पर निराशा साफ दिख रही थी। कप्तान रोहित शर्मा तो तुरंत ही ड्रेसिंग रूम के अंदर चले गए। मोहम्मद सिराज मैदान पर ही रोने लगे थे। इस मैच को देखने के लिए भारत को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अहमदाबाद पहुंचे थे। पीएम के नाम पर ही स्टेडियम का नाम नरेंद्र मोदी स्टेडियम का नाम भी रखा गया है। अहमदाबाद में विश्व कप

2023 का फाइनल ऑस्ट्रेलिया से हारने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय क्रिकेट टीम के ड्रेसिंग रूम में पहुंचे।

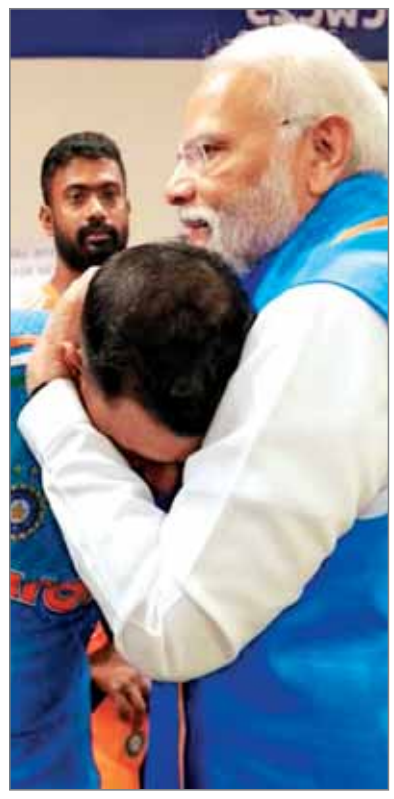

किसी को हर बार नहीं बुला सकते थाना, ये निजता का हनन

सर्विलांस रजिस्टर पर जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हाईकोर्ट की दो टूक

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हाई कोर्ट ने पुलिस अधिकारियों से साफ-साफ कहा है कि सर्विलांस रजिस्टर में उपस्थिति दर्ज कराने के नाम पर किसी को भी बार बार थाने नहीं बुलाया जा सकता है। हाई कोर्ट ने नागरिकों के मौलिक अधिकार, उनकी स्वतंत्रता का सम्मान करने और वैध निगरानी सुनिश्चित करने के लिए सर्विलांस रजिस्टर में एंट्री की सख्ती से व्याख्या करने और उन्हें सीमित करने को कहा है। लाइव लॉ की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस जावेद इकबाल वानी ने कहा कि निगरानी के नाम पर किसी की भी व्यक्तिगत गरिमा से समझौता नहीं किया जाना चाहिए और निगरानी रजिस्टर में एंट्री और निगरानी नियमों को नियंत्रित करने वाले पुलिस अधिकारियों द्वारा इसमें आवश्यक सावधानी और देखभाल बरतनी चाहिए।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में सात दिवसीय नेशनल शार्ट टर्म ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन 'बेसिक ऑफ रिसर्च मेथड्स यूजिंग एसपीएसएस सॉफ्टवेयर' का आयोजन संपन्न

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में सात दिवसीय नेशनल शार्ट टर्म ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन 'बेसिक ऑफ रिसर्च मेथड्स यूजिंग एसपीएसएस सॉफ्टवेयर' का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के प्रबंध संकाय, वाणिज्य संकाय, तथा मानविकी एवं उदार कला संकाय तथा शासकीय हमीदिया आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो.रजनी कांत, कुलपति, आरएनटीयू द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बोधगया के लाइब्रेरियन डॉ. पी एम गुप्ता, रॉय यूनिवर्सिटी अहमदाबाद से डॉ. आशीष रामी एसोसियेट डीन, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंस एंड रिसर्च भोपाल के लइब्रेरियन, डॉ संदीप कुमार पाठक, प्रोफेसर एडं हैड स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा की डॉ. कविता इंदापुरकर, इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एज्युकेशन एंड रिसर्च के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ. परमजीत सिंह तथा डॉ. स्वाती चौहान, एडवाइजर, सेंटर फॉर इकोनामिक सेक्टर (AIGGPA) द्वारा शोधार्थियों को ट्रेनिंग प्रदान की गई। सात दिन चलने वाले सभी तकनीकी सत्रों में शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों

तथा सहायक प्राध्यापकों ने शोध कार्य में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न सॉफ्टवेयर के उपयोग पर हैंडस ऑन ट्रेनिंग प्राप्त की। डॉ. पी एम गुप्ता ने मेंडले सॉफ्टवेयर के प्रयोग से रिफरेंसिंग एवं रिव्यू ऑफ लिटरेचर पर प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ.स्वाति चौहान ने एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग शोध में किस प्रकार किया जाएगा इस पर सतत दो दिनों तक प्रशिक्षण दिया। ट्रेनिंग प्रोग्राम द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े 180 शोधार्थियों एवं अकैडमिशियन ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समापन समारोह में रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीकांत ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के ट्रेनिंग कार्यक्रम शोधार्थियों को शोध की विधियों और शोध में एसपीएस के प्रयोग के विषय में सटीक जानकारी प्रदान करते हैं जिससे शोधकर्ता नवीन तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होंगे। अंत में शोधार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

समापन समारोह में शोधार्थी स्मिता ठाकुर, सच्चिदानंद, प्रीतू सिंह द्वारा कहा गया कि यह प्रशिक्षण उनके शोध कार्य में गुणवत्ता की वृद्धि करेगा एवं प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी को वह अपने शोध कार्य में निश्चित रूप से उपयोग करने में समर्थ हुए हैं। कार्यक्रम का प्रतिवेदन श्रीमती नीता घांग्रेकर ने प्रस्तुत किया। समापन समारोह में वाणिज्य संकाय के डीन डॉ. रविंद्र पाठक द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

सात दिवसीय कार्यक्रम में कोऑर्डिनेटर डॉ. उषा वैद्य प्राध्यापक समाजशास्त्र, श्रीमती नीता घांग्रेकर सह प्राध्यापक मैनेजमेंट, श्रीमती प्रीति तिवारी सहायक प्राध्यापक कॉमर्स तथा डॉ मनोज सिन्हा, प्राध्यापक शासकीय हमीदिया आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज भोपाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के कन्वीनर डॉ. रवीन्द्र पाठक,डीन वाणिज्य संकाय, डॉ. प्रीति श्रीवास्तव डीन प्रबंध संकाय तथा डॉ. रुचि मिश्रा तिवारी डीन मानविकी एवं उदार कला संकाय रहे।

महाराष्ट्र में अब नई खिचड़ी

एकनाथ शिंदे के मंत्री ही नए मोर्चे की तैयारी में

रैली करके दिखाई ताकत, छगन भुजबल हुए ऐक्टिव

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की राजनीति में उथल-पुथल और लगातार नए खेमों का तैयार होना जारी है। मराठा आरक्षण आंदोलन पर अब तक एकनाथ शिंदे सरकार कोई हल नहीं निकाल सकी है। इस बीच ओबीसी जातियों की खेमेबंदी नई टेंशन दे रही है। दिलचस्प बात यह है कि सरकार में ही मंत्री छगन भुजबल इस खेमे का नेतृत्व कर रहे हैं। चर्चा तो यहां तक है कि वह ओबीसी के नाम पर एक नई पार्टी या फिर मोर्चा भी खड़ा कर सकते हैं। 17 नवंबर को जालना में हुई ओबीसी रैली के बाद से इसके कयास लग रहे हैं। जालना की रैली में मौजूद कई वक्ताओं ने छगन भुजबल से ओबीसी मोर्चे की लीडरशिप संभालने को कहा। यही नहीं उन्हें सीएम बनाने तक की मांग की गई। महाराष्ट्र की राजनीति फिलहाल मराठा और ओबीसी खेमों में बंटती दिख रही है। एक तरफ मनोज जारांगे पाटिल के नेतृत्व में मराठा आंदोलन जोर पकड़ रहा है तो वहीं छगन भुजबल और कांग्रेस नेता विजय वडेत्तिवार एक ओबीसी मोर्चा खड़ा करने की कोशिश में हैं। दरअसल दोनों नेता लंबे समय से साइडलाइन चल रहे हैं। ऐसे में इन्हें लगता है कि मराठा आंदोलन के मुकाबले वह ओबीसी जातियों को साथ ला सकते हैं। छगन भुजबल लगातार कहते रहे हैं कि मराठाओं को ओबीसी का दर्जा नहीं दिया जा सकता। यदि ऐसा होता है तो यह ओबीसी समाज के हक कीमत पर होगा। इस मोर्चे को लेकर कयास इसलिए तेज हैं क्योंकि विजय वडेत्तिवार ने यहां तक कह दिया है कि वह इस मसले पर कांग्रेस तक छोड़ने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि यदि छगन भुजबल ओबीसी समाज का नेतृत्व करना चाहें तो मैं पार्टी छोड़कर आने को तैयार हूं। इस मोर्चे की रैली में एक पीला झंडा भी फहराया गया।

करतारपुर गुरुद्वारा में नॉनवेज पार्टी पर विवाद, भड़के सिख

● मनजिंदर सिरसा बोले-सीईओ पद पर सिख की नियुक्ति हो, पहले भी जताई थी आपत्ति

अमृतसर (एजेंसी)। पाकिस्तान के नारोवाल स्थित श्री करतारपुर साहिब परिसर में हुई नॉनवेज और डांस पार्टी पर विवाद गर्माता जा रहा है। एक बार फिर पाकिस्तान की परियोजना प्रबंधन इकाई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पद पर सिख की नियुक्ति की मांग उठने लगी है। भाजपा के सिख नेता और दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा ने स्पष्ट किया कि वे पहले ही इसके खिलाफ थे और आपत्ति भी उठाई गई थी। मनजिंदर सिरसा ने ट्वीट कर लिखा- हमने 2021 में करतारपुर कॉरीडोर के सीईओ के रूप में एक गैर-सिख व्यक्ति की नियुक्ति पर आपत्ति जताई थी। चूंकि प्रबंधन बोर्ड को सिख मर्यादा का कोई ज्ञान नहीं है, हमें डर था कि गुरुद्वारा परिसर में ईशनिंदा वाली हरकतें हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि हमारा डर सच में तब बदल गया जब सीईओ सैयद अबू बकर कुरैशी का करतारपुर साहिब गुरुद्वारा परिसर में शराब पीने और मांस खाने का वीडियो वायरल हुआ। हम मुसलमानों के नेतृत्व वाले इस संगठन को तत्काल भंग करने की मांग करते हैं। जिनके कार्यों से दुनिया भर में सिखों की भावनाओं को ठेस पहुंची है।

30 प्रतिशत कमीशन वाली सरकार 30 नवंबर के बाद हो जाएगी विदा

तेलंगाना में केसीआर सरकार पर जमकर बरसे बीजेपी चीफ जेपी नड्डा

हैदराबाद (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने विधायकों पर तेलंगाना सरकार की दलित बंधु योजना में 30 प्रतिशत कमीशन वसूलने का आरोप लगाया। नड्डा ने कहा कि राज्य में के. चंद्रशेखर राव के नेतृत्व वाली सरकार को आगामी विधानसभा चुनाव के बाद विदा किया जाना चाहिए। उन्होंने लोगों से उनकी पार्टी (भाजपा) को चुनने का आग्रह किया। नड्डा ने नारायणपेट और चेवेला में रैलियों को संबोधित किया। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कालेस्वरम सिंचाई परियोजना ने मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव के लिए एटीएम के रूप में काम किया और यह भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गई। उन्होंने कहा, कालेश्वरम परियोजना की लागत, जो 38,000 करोड़ रुपये थी, आज बढ़कर 1.20 लाख करोड़ रुपये हो गई है। इसमें भी घोटाला हुआ।

बीजेपी का यूसीसी लाने और मुस्लिम कोटा हटाने का वादा

राम मंदिर की मुफ्त यात्रा भी, तेलंगाना के लिए भाजपा ने चला मास्टर स्ट्रोक

हैदराबाद (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिए अपना घोषणापत्र जारी किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पार्टी का घोषणापत्र जारी करते हुए कहा कि बीजेपी तेलंगाना में समान नागरिक संहिता लागू करेगी, 4 प्रतिशत मुस्लिम कोटा खत्म होगा और अयोध्या में राम मंदिर की मुफ्त यात्रा कराई जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने पिछले 70 वर्षों के दौरान राम मंदिर के निर्माण में बाधा डाली और देरी की। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंदिर का भूमि पूजन किया था और प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को की जाएगी। शाह ने रैली में मौजूद लोगों से तेलंगाना में भाजपा की सरकार बनाने की अपील की और कहा कि पार्टी नीत सरकार सभी लोगों को अयोध्या में भगवान राम के मुफ्त दर्शन कराने की व्यवस्था करेगी। तेलंगाना की 119 सदस्यीय विधानसभा के लिए 30 नवंबर को मतदान होगा और मतगणना 3 दिसंबर को होगी।

गाजा में बंधकों की रिहाई के लिए बंधी 'समझौते' की आस

● करीब पहुंचे हमास और इजरायल, कुछ मुद्दों पर रुकी है बात ● कुछ मुद्दे सुलझे,कुछ पर दोनों पक्षों में नहीं बन पा रही सहमति

तेल अवीव (एजेंसी)। हमास की कैद से इजरायल के कुछ बंधक जल्दी ही छूट सकते है। इजरायल के साथ इस पर उसकी डील फाइनल दौर में है। डील में सबसे पहले गाजा में हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों में से 50 की रिहाई के बदले पांच दिनों के युद्धविराम पर बात चल रही है। जिसके बाद चीजों को आगे बढ़ाया जाएगा। हालांकि अभी तक समझौते का कोई फाइनल ड्राफ्ट तैयार नहीं हो पाया है लेकिन बताया गया है कि वार्ताकार मामले को सुलझाने के काफी नजदीक हैं। अगले कुछ दिन में इसका ऐलान भी हो सकता है। अमेरिका, इजरायल और हमास के बीच इस समझौते में कतर अहम भूमिका निभा रहा है। सीएनएन ने मामले से जुड़े सूत्रों के आधार पर की गई रिपोर्ट में बताया है कि

इस डील पर बीते कुछ दिन से बातचीत चल रही है। इसमें कुछ उतार चढ़ाव आए हैं लेकिन ये जारी है। सूत्रों का कहना है कि समझौते में अटके हुए बिंदुओं में कमियां दूर होनी शुरू हो गई हैं और समझौते में अभी भी कुछ दिन लग सकते हैं। डिप्टी नेशनल सिक्योरिटी सलाहकार जॉन फाइनर ने इस समझौते पर अहम जानकारी देते हुए कहा कि हम शायद एक बिंदु पर पहुंचने के बहुत करीब हैं। ये वार्ता हफ्तों पहले शुरू हुई थी और काफी बेहतर तरीके से आगे बढ़ी है। फाइनर ने भी ज्यादा ब्यौरा नहीं देते हुए कहा कि अभी कोई अंतिम समझौता नहीं हुआ है। सीएनएन को समझौते बारे में जानकारी देने वाले सूत्रों ने कहा है कि ये वार्ता काफी कठिन रही है। बार-बार इसमें कई तरह के पेंच फंसे हैं।

मतगणना स्थल की त्रिस्तरीय सुरक्षा 3 दिसंबर को खास सुरक्षा के इंतजाम

पुलिस कमिश्नर और कलेक्टर ने व्यवस्था की जानकारी दी

इंदौर। पुलिस कमिश्नर मकरंद देउस्कर और कलेक्टर डॉ इलैया राजा टी ने चुनाव मतगणना की व्यवस्था के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मतगणना स्थल की त्रिस्तरीय सुरक्षा की गई है। मतगणना वाले दिन भी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाएंगे। 3 दिसम्बर तक मतगणना स्थल पर यही सुरक्षा व्यवस्था रहेगी। साथ ही नतीजों के बाद विजय जुलूसों की भी व्यवस्था की जाएगी।

पुलिस कमिश्नर ने कहा कि मतगणना स्थल पर तीन स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। इसके अलावा मतगणना वाले दिन अतिरिक्त सुरक्षा इंतजाम की जाएगी। चुनाव नतीजों के बाद निकलने वाले विजय जुलूस की भी सुरक्षा व्यवस्था की जाएगी, ताकि कोई असहज स्थिति निर्मित न हो ! नेहरू स्टेडियम में त्रिस्तरीय सुरक्षा के बीच मतगणना की मशीन रखी गई है इसके साथ ही 24 घंटे सीसीटीवी कैमरे से नजर भी रखी जा रही है। इस पूरी व्यवस्था को लेकर इंदौर पुलिस कमिश्नर ने बताया कि 3 दिसंबर तक स्ट्रांग रूम की व्यवस्था त्रिस्तरीय है। इसके साथ ही 3 तारीख को होने वाली मतगणना की भी सुरक्षा व्यवस्था की जाना है। विजय जुलूस की भी सुरक्षा व्यवस्था की जाएगी। पूरे प्रदेश में यही व्यवस्था की जाना है। इंदौर में संपूर्ण बल के साथ इस व्यवस्था को पुख्ता बनाया जाएगा। इसके साथ ही इंदौर पुलिस कमिश्नर ने बताया कि मतगणना वाले दिन जो छुटपुट घटनाएं हुई हैं, उसमें 12 प्रकरण दर्ज किए गए हैं।

मतगणना की तारीख को लेकर भ्रम नहीं

सोशल मीडिया पर किसी ने मतगणना की तारीख बदलने को लेकर अफवाह उड़ा दी। कलेक्टर ने इस मामले में स्पष्ट किया कि ऐसा कुछ भी नहीं है। मतगणना को लेकर इंदौर कलेक्टर ने बताया की तीन प्रकार की तैयारियां की गई है, जिसके लिए सभी अधिकारियों को ट्रेनिंग दी जाएगी। मतगणना को लेकर इंदौर कलेक्टर डॉ इलैया राजा टी ने बताया की मतगणना को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई। तीन लेवल पर कार्य किया जाएगा। सबसे पहले अधिकारियों को ट्रेनिंग दी जाएगी। पहले दो लेवल पर थियोरिटिकल ट्रेनिंग होगी फिर एक लेवल पर टेबल काउंटिंग एक्सरसाइज़ का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

उन्होंने आगे बताया की काउंटिंग हाल में अभी लॉजिस्टिक लगना है। मीडिया और उम्मीदवारों के एजेंट्स के बैठने की व्यवस्था होगी। जनता को राउंड वाइस रिजल्ट बताया जाएगा, इसके भी पूरे इंतजाम रहेंगे। इस प्रकार से हमने 3 प्रकार के इंतजाम मतगणना को लेकर किए हैं।

दहेज प्रताड़ना के बाद पति ने दूसरी शादी की, पहली पत्नी ने रिपोर्ट की

शिकायत में पति और सास पर मारपीट का भी आरोप लगाया

इंदौर। पहली पत्नी के रहते पति ने दूसरी शादी कर ली। पहली पत्नी की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज किया है। पहली पत्नी का आरोप है, कि उसके पति एक फार्मा कंपनी में एमडी हैं। मुझे धोखे में रखकर पति ने दूसरी शादी की है। इस शिकायत में पहली पत्नी ने सास-ससुर पर भी आरोप लगाए हैं। पुलिस ने धमकाने, धोखे में रखकर दूसरी शादी करने और दहेज प्रताड़ना का मामला दर्ज किया। हीरा नगर पुलिस के मुताबिक पहली पत्नी भोपाल निवासी मंजू लड्ढया और योगेश की शादी 7 साल पहले हुई थी। 2016 में दोनों को हांगकांग जाना था इसलिए उन्होंने कोर्ट मैरिज की। इसके एक साल बाद 2017 में दोनों के परिवार ने धार्मिक रीति-रिवाज से योगेश और मंजू की शादी की। पहली पत्नी का आरोप है कि 2017 में पति एमआर थे और वे अकसर टूर पर ही रहते थे। इसके चलते सास धन्वंतरि से कई बार कहासुनी होती थी। धीरे-धीरे यह कहासुनी बढ़ती गई। पहली पत्नी ने पुलिस को बताया कि सास ने कई बार उसे पीटा भी।

बिजनेस के लिए 20 लाख मांगे

पुलिस को बताया कि पति ने पहले उसका साथ दिया। बाद में वे भी सास के साथ मिलकर मारपीट करने लगे। योगेश ने मुझे अपने माता-पिता से बिजनेस शुरू करने के लिए 20 लाख रुपए लाने को कहा। दबाव बढ़ा तो दुखी होकर मंजू 28 जुलाई को अपने मायके भोपाल चली गई। तीन बाह बाद अक्टूबर में वापस आई तो सास-ससुर ने रखने से इंकार कर दिया। मंजू ने पुलिस को बताया कि जब वह इंदौर लौटी तो पति कई बार घर नहीं आते थे, इस कारण उसे शंका हुई। इस बीच उसे पता चला कि 19 सितंबर को पति योगेश ने दूसरी शादी कर ली। यह शादी संचार नगर स्थित आर्य समाज मंदिर में हुई। योगेश ने यहां दिव्या शर्मा नाम की लड़की से शादी की थी। सास-ससुर से इस बारे में पूछने पर उन्होंने इसे सही बताया और कहा कि इसलिए वे मंजू को अब साथ नहीं रखना चाहते। यह पता चलते ही मंजू ने अपने माता-पिता और भाई को 18 नवंबर शनिवार को इंदौर बुलाया। सभी ने पति योगेश और सास-ससुर से बातचीत की, लेकिन उन्होंने मंजू के माता-पिता को घर से भगा दिया। इसके बाद मंजू ने हीरा नगर थाने पहुंचकर योगेश और उसके सास-ससुर के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

ट्रैफिक पुलिस ने नियम तोड़ने पर 9 माह में 6 करोड़ रुपए वसूले

एक लाख 33 हजार वाहन चालकों पर कई कार्रवाई

इंदौर। शहर के यातायात को सुदृढ़ बनाने ट्रैफिक पुलिस लगातार काम कर रही है। वाहन चालकों को नियमों का कड़ाई से पालन करने की सीख देकर चालानी कार्रवाई भी सख्ती से कर रही है। यही कारण है कि ट्रेफिक पुलिस ने एक जनवरी से 30 सितम्बर तक नौ माह में कुल एक लाख 33 हजार 909 वाहन चालकों पर चालानी कार्रवाई की।

ट्रैफिक उल्लंघन करने वालों से शमन शुल्क के रुप में 5 करोड़ 95 लाख 32 हजार 400 रुपए वसूले। जबकि अभी वर्ष 2023 की समाप्ति में तीन माह शेष है। तीन माह की कार्रवाई के बाद शमन शुल्क वसूली का आंकड़ा 6 करोड़ की राशि पार कर लेगा।

ट्रैफिक के पुलिस उपायुक्त मनीष अग्रवाल ने बताया कि ट्रेफिक पुलिस यातायात नियमों का पालन करने, वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात नहीं करने, वाहन धीमी गति से चलाने, वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करने को लेकर कई बार कैम्प लगा चुकी है।

कैम्प में जागरूकता के लिए स्कूल और कालेजी बच्चों ने भी सहभागिता की है। समय-समय पर निगम भी बेहतर ट्रैफिक को लेकर अभियान चला चुका है। इसके बावजूद वाहन चालक अनदेखी करते हैं, जिससे कई बार वे घायल होकर जान तक गंवा बैठते हैं। अधिकांश घटनाएं रात को होती है। जब युवा शराब के नशे में वाहन चलाते हैं तो जान जोखिम में डालते हैं।

शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर कार्रवाई के लिए ब्रेथ एनालाइजर का इस्तेमाल किया जाता है।

किस उल्लंघन पर कितनी कार्रवाई

रांग पार्किंग पर 6950, नंबर प्लेट गलत होने पर 5758, संकेत उल्लंघन 55732, ओवरलोड वाहन चलाने पर 98, तीन सवारी पर 1158, प्रदूषण फैलाने वाले पर 42, तेज गति 662, बिना हेलमेट वाले 42070, सीट बेल्ट वाले 10048, काली फिल्म 2613, बिना परमिट 8, प्रेशर हार्न 84, हूटर पर 2, शराब पीकर वाहन चलाने पर 321, बिना लाइसेंस वाले 118, मोबाइल पर बात करने वाले 1522, अन्य 6723 (कुल 133909 चालान) बनाए गए। ट्रैफिक पुलिस द्वारा चौराहों पर रेड सिग्नल का उल्लंघन करने वालों पर सीसीटीवी कैमरे से नजर रखी जा रही है। उल्लंघन करने वालों के चालान रोजाना जनरेट किए जा रहे हैं। कई वाहन चालकों से हाथों हाथ राशि भी वसूली जाती है।

निरंजनपुर सब्जी मंडी का उपमंडी बनना आईडीए के कारण अटका

सब्जी मंडी के लिए आईडीए ने 70 एकड़ जमीन देना नकारा

इंदौर। निरंजनपुर सब्जी मंडी को उपमंडी बनाने मामला अटक गया। व्यापारी हित में मंडी सचिव ने आईडीए (इंदौर विकास प्राधिकरण) से उपमंडी के लिए पत्र लिखकर 70 एकड़ जमीन मांगी थी। लेकिन, प्राधिकरण ने मंडी प्रशासन के पत्र को गंभीरता से नहीं लिया। इससे उपमंडी की योजना पर पूरी तरह विराम लग गया।

निरंजनपुर में एक दशक पहले सब्जी मंडी संचालित हो रही है। इंदौर विकास प्राधिकरण ने लोहा मंडी के पास 14 एकड़ जमीन मंडी प्रशासन को उपलब्ध कराई है। यहां छोटे-बड़े दो सौ से अधिक व्यापारी हैं। व्यापारियों के लिए यहां मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। रोजाना हजारों की संख्या में ग्राहक भी पहुंचते हैं, उन्हें भी असुविधा का सामना करना पड़ता है। मंडी को सर्वसुविधायुक्त बनाने मंडी प्रशासन ने प्रस्ताव तैयार किया था। चोइथराम मंडी के बाद यह दूसरी बड़ी मंडी होने से इसे उपमंडी में तब्दील करने की योजना थी। व्यापारियों ने भी इस संबंध में मंडी प्रशासन को पत्र लिखा था। मंडी प्रशासन ने पूरे क्षेत्र का भ्रमण किया था। प्रशासन को यहां कई अनियमितताएं

नजर आई। इसके पश्चात व्यापारियों के हित में निर्णय लेते हुए इंदौर विकास प्राधिकरण को मंडी सचिव नरेश परमार ने पत्र लिखा। पत्र में सचिव ने कहा कि व्यापारियों की दिक्कतों को देखते हुए मंडी के पास रिक्त पड़ी जमीन भी उपलब्ध कराई जाएगी।

उपमंडी के लिए प्रशासन को 70 एकड़ जमीन की दरकार है। प्राधिकरण ने मंडी प्रशासन के पत्र को गंभीरता से नहीं लिया, जिससे निरंजनपुर में उपमंडी की योजना पर पूरी तरह विराम लग चुका है। यहां आम दिनों में तो व्यापारी जैसे-तैसे कारोबार कर लेते हैं, लेकिन बारिश में ओटले, टीनशेड नहीं होने से, जलजमाव से सब्जियों बह जाती है। इसी प्रकार शहर में नई अनाज मंडी की योजना भी कागज में सिमटकर रह गई। नई मंडी के लिए प्रशासन ने कैलोद करताल और माचल गांव में जगह देखी थी, लेकिन अन्य विभागों की जमीन होने से वहां मंडी का निर्माण नहीं हो सका। कैलोद करताल में 104 एकड़ जमीन पर मंडी बनाने मुख्यमंत्री ने भूमिपूजन भी किया था, जब फंड जारी होने की बारी आई तो जमीन गोमुखी होने से प्रस्ताव को शासन ने ही निरस्त कर दिया था।

48 शिकायतों का निराकरण, ठगों से सवा चार करोड़ वापस कराए

ऑनलाइन ठगी के साथ साइबर फ्रॉड के अपराध भी बढ़े

इंदौर। शहर में ऑनलाइन ठगी के साथ साइबर क्राइम में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। साइबर क्राइम से बचने कई बार अधिकारी एडवाइजरी जारी कर चुके हैं, इसके बावजूद लोग आसानी से ठगों की बातों में आकर अपने पैसे गंवा बैठते हैं। हालांकि, साइबर अपराध घटित होने से अपराधी तक पुलिस को पहुंचने में आसानी रहती है।

साइबर सेल में जनवरी से अब तक करीब 10 माह में 48 फरियादी शिकायत लेकर पहुंचे थे। इनमें अधिकांश शिकायतें फर्जी कंपनी बनाकर पैसा ऐंठने, शासकीय नौकरी दिलाने की है। साइबर क्राइम के बाद बदमाश जिस सिम कार्ड का उपयोग करता है, वह तोड़कर फेंक देता है, जिससे आरोपी तक पहुंच पाना कई बार पुलिस के लिए चुनौती भरा होता है। फिर भी पुलिस जिस क्षेत्र या राज्य की सिम से फोन आता है, वहां से आरोपी को पकड़ लेती है। साइबर क्राइम ने 48 शिकायतकर्ताओं का निराकरण कर ठगों से 4 करोड़ 39 लाख रुपए वापस कराए। मामले में कई राज्यों में ठगी करने वाले 6 बदमाश पकड़े थे। बदमाशों के पकड़ने से पुलिस को उनकी लिंक व गैंग तक पहुंचने में आसानी रही है।

उल्लेखनीय है कि क्राइम ब्रांच ने भी आनलाइन ठगी के मामले में कई अपराधियों को पकड़कर सलाखों के पीछे धकेल दिया है। क्राइम ब्रांच ने इसके अलावा हथियार रखने, मादक पदार्थ की खरीद फरोख्त करने वाले बदमाशों को भी बड़ी मात्रा मे पकड़ा है। साइबर सेल के पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र सिंह ने बताया कि शिकायत के लिए अलग से ऐप भी बनाया गया है। शिकायतों में कई बार फरियादी का नाम गुप्त रखा जाता है, ताकि इन्वेस्टीगेशन के समय जांच प्रभावित न हो सके।

इंडिगो ने इंदौर से तीन उड़ान निरस्त की, यात्रियों का हंगामा

कहा कि ऑपरेशनल कारणों से उड़ानें निरस्त की गई

इंदौर। इंडिगो पिछले कुछ दिनों से इंदौर से लगातार अपनी उड़ानों को निरस्त कर रही है। शनिवार को भी कंपनी ने इंदौर से जुड़ी तीन उड़ानों को निरस्त कर दिया। इनमें जयपुर और जबलपुर की उड़ानें शामिल हैं। उड़ानों के निरस्त होने से परेशान यात्रियों ने एयरपोर्ट पर जमकर हंगामा किया।

एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार, इंडिगो एयरलाइंस की उड़ान (6ई-7154/7699) सुबह 7 बजे जयपुर से इंदौर आकर 7.20 बजे वापस जयपुर जाती है। वहीं, एक अन्य उड़ान (6ई-7316) सुबह 7.20 बजे जबलपुर जाती है। लेकिन, कंपनी ने इन तीनों ही उड़ानों को निरस्त कर दिया। कंपनी ने ऑपरेशनल कारणों से उड़ानों को निरस्त करने की बात कही। जबकि, जबलपुर जाने वाला विमान रात को बेंगलुरु से रात 11.50 बजे इंदौर आता है और रात को यहीं रुकने के बाद सुबह जबलपुर जाता है। लेकिन, परसों रात यह विमान रात 3.15 बजे इंदौर पहुंचा था। इसमें तकनीकी खराबी के कारण ही उड़ान के आने में देरी हुई थी और यहां आने के बाद भी इसमें तकनीकी समस्या सामने आने के बाद जबलपुर उड़ान को निरस्त किया गया। कंपनी ने उड़ानों को निरस्त किए जाने पर इससे जाने के लिए एयरपोर्ट पहुंचे यात्रियों ने जमकर हंगामा किया। कंपनी और एयरपोर्ट प्रबंधन के अधिकारियों ने उन्हें शांत किया। इसके बाद एयरलाइंस अधिकारियों ने उन्हें रिफंड और री-बुकिंग का विकल्प दिया। कंपनी ने जयपुर के यात्रियों को रात की उड़ान में जाने का भी विकल्प दिया। जबलपुर के लिए कोई सीधी उड़ान न होने से इसके यात्री सबसे ज्यादा परेशान हुए।

गुलाबी ठंड का अहसास होने लगा हल्की बारिश होने के भी आसार

इंदौर। हल्की ठंड के बाद ठंड का असर दिखाई देने लगा और ठिठुरन बढ़ने लगी। दिन के तापमान की गिरावट में दर्ज की गई। यह अनुमान भी लगाया गया कि 26-27 नवंबर को कुछ इलाकों में हल्की बारिश हो सकती है। दो दिन में फिर दिन और रात का तापमान में बढ़ोतरी हुई। बीते 48 घंटों में दिन और रात के तापमान में 3-3 डिग्री सेल्सियस का उछाल आया। इस बार नवम्बर के आखिरी दिनों में ही तापमान में कमी आएगी।

उत्तर-पूर्व दिशा से चल रही हवाओं के चलते मौसम बदलता महसूस हो रहा है। रात में सर्द हवाओं से ठिठुरन महसूस हो रही, दिन का तापमान भी लगातार गिर रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, आने वाले दिनों में बंगाल की खाड़ी में तूफान उठा, जिसके चलते प्रदेश का मौसम प्रभावित होने के आसार जताए जा रहे हैं। यदि इस तूफान ने प्रदेश के मौसम को प्रभावित किया तो 26 या 27 नवंबर के आसपास जो प्रदेश के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश होने के आसार हैं। इसके बाद तेज हवाओं का सिलसिला फिर ताज हो सकता है। मौसम में गड़बड़ी के चलते प्रदेश के पश्चिमी हिस्से में बारिश होने की संभावना जताई गई है।

सर्द हवाओं में तेजी आने के कारण मौसम में ठंडक है और लोग इस ठंड के मौसम से निजात पाने के लिए तरह-तरह की कवायद कर रहे हैं। कड़ाके की ठंड के बीच मौसम का मिजाज बदला नजर आ रहा है। प्रदेश के मालवा निमाड़ अंचल में भी मौसम का बदलाव देखने मिल रहा। शुक्रवार को अंचल के कई जिलों में सुबह से ही मौसम का मिजाज बदला हुआ नजर आया, जहां कई जिलों में बादल छाए रहे, तो वहीं कई जिलों में धूप ने लोगों का पसीना निकाल दिया। आने वाले एक-दो दिन होता इसी तरह का मौसम बने रहने की संभावना है।

दो दिन में तापमान बढ़ा

रविवार को दिन का तापमान 30 डिग्री (सामान्य) तथा रात का तापमान 18.6 (+5) डिग्री सेल्सियस रहा। लगभग इतना ही तापमान आठ दिन पहले था। उसके बाद धीरे-धीरे नीचे आया। लेकिन, दो दिन से फिर बढ़ोतरी हुई। 17 नवम्बर को दिन का तापमान 27.4 (-2) तथा रात का तापमान 15.6 डिग्री सेल्सियस था। रविवार को दिन और रात में हल्की गर्मी का अहसास होता रहा। इधर सोमवार को भी सुबह से मौसम साफ है तथा दृश्यता 2500 मीटर तक रही, जबकि हवा की रफ्तार 6 किमी प्रति घंटा थी इससे ठंड का खास असर नहीं दिखा।

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अभी हवा की दिशा पूरी तरह पूर्वी होने तथा पश्चिमी विक्षोभ से सक्रिय होने के कारण ठंड हल्की है। 23 नवम्बर से एक और विक्षोभ सक्रिय होगा। फिर 27 नवम्बर के बाद तापमान में गिरावट आएगी। इस दौरान रात का तापमान 15 डिग्री या उससे नीचे जा सकता है। इस बार रात का पारा 16 नवम्बर को 15 डिग्री सेल्सियस पर आया। फिर इसके बाद इसमें इजाफा होता गया और अब 18.6 डिग्री तक पहुंच गया।

स्ट्रांग रूमों की सुरक्षा एवं निगरानी के लिए कंट्रोल रूम बनाया गया

एसडीएम को प्रभारी बनाया, अन्य अधिकारियों की ड्यूटी लगाई

इंदौर। जिले में विधानसभा निर्वाचन के लिए 17 नवम्बर को मतदान हुआ। मतदान के बाद इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन और वीवीपेट कड़ी सुरक्षा के बीच नेहरू स्टेडियम में स्थित विधानसभा क्षेत्रवार बनाए स्ट्रांग रूमों में रखी गई है। रोज अलग-अलग अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है।

इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और वीवीपैट की सुरक्षा एवं निगरानी सतत रूप से की जा रही है। इसके लिए कंट्रोल रूम भी स्थापित किया गया है। हातोद के एसडीएम अजय भूषण शुक्ला को कंट्रोल रूम का प्रभारी बनाया गया है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ इलैयाराजा टी द्वारा जारी आदेश के अनुसार तहसीलदार और नायब तहसीलदारों की भी ड्यूटी लगाई गई। यह ड्यूटी शिफ्टवार रहेगी। शनिवार और रविवार के बाद सोमवार के लिए योगेश मेश्राम, धर्मेन्द्र सिंह चौहान तथा शिवशंकर जारोलिया, मंगलवार के लिए दिलीप कुमार वर्मा, पूजा सिंह चौहान तथा ओंकार मनाग्रे, बुधवार के लिए याचना दीक्षित, नागेंद्र त्रिपाठी और निर्भय सिंह पटेल, गुरुवार के लिए अंकिता वाजपेयी जितेंद्र सोलंकी तथा कमलेश कुशवाहा, शुक्रवार के लिए विवेक कुमार सोनी, देवेंद्र कच्छवा तथा अनिल मेहता, शनिवार के लिए नारायण नंदेड़ा, बलबीर सिंह राजपूत तथा निधि जायसवाल की ड्यूटी लगाई गई।

ईवीएम स्ट्रांग रूम में स्थाई सुरक्षा गार्ड 24 घंटे के चक्र में ड्यूटी पर तैनात हैं। ईवीएम स्ट्रांग रूम में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण मोबाईल आदि प्रतिबंधित किए गए है।

स्ट्रांग रूम की लॉगबुक, नियुक्त सुरक्षा का ड्यूटी रजिस्टर संधारित किया जा रहा है। विजिटर रजिस्टर भी संधारित किया जाएगा। सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से भी सतत निगरानी की जा रही है।

संपादकीय

'हलाल' पर बैन के मायने

लगता है उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा 'हलाल' पर रोक नया राजनीतिक मुद्दा बनने वाला है। राज्य सरकार ने मांसाहारी व शाकाहारी उत्पादों पर हलाल के सर्टिफिकेट बांटने पर रोक लगा दी है। शिकायत कर्ता शैलेन्द्र कुमार शर्मा की शिकायत में हलाल ट्रस्ट सहित आठ एजेंसियों के खिलाफ़ कथित तौर पर 'फ़र्ज़ी' और 'ग़ैर-क़ानूनी' तरीक़े से हलाल सर्टिफ़िकेट बांटने का आरोप लगाया गया है। लेकिन इससे भी गंभीर आरोप यह है कि हलाल सर्टिफिकेट से जो पैसा हलाल सर्टिफिकेट से कमाया जा रहा है, वो देश विरोधी कामों में खर्च हो रहा है। इस आरोप के पीछे क्या प्रमाण है, यह अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन इस आदेश ने देश में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की नई रेखा खींचना शुरू कर दिया है। उधर पुलिस ने हलाल सर्टिफिकेट देने वाली कुछ कंपनियों के खिलाफ अवैध तरीके से यह प्रमाण पत्र देने का मामला भी दर्ज किया गया है। जिन उत्पादों पर सरकार ने हलाल सर्टिफिकेट बैन किया है, उनमें खान-पान से लेकर ब्यूटी प्रॉड्क्ट्स तक शामिल हैं। सरकार के आदेश के अनुसार अब यूपी में हलाल सर्टिफाइड प्रॉडक्टस का निर्माण, बिक्री और भंडारण अवैध हो गया है। ऐसा पाए जाने पर संबंधित फर्म (व्यक्ति) के खिलाफ औषधि और प्रसाधन सामग्री कानून के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी। यहां सवाल उठता है कि हलाल सर्टिफिकेट के मायने क्या हैं, कौन यह प्रमाणपत्र देता है और ऐसे प्रमाण पत्र की वैधता क्या है? आमतौर पर हलाल सर्टिफिकेशन मीट और नॉन-मीट दोनों तरह के उत्पादों के लिए दिया जाता है। हलाल सर्टिफाइड का मतलब है कि खाने वाला प्रोडेक्ट शुद्ध है और इस्लामी कानून के अनुरूप तैयार किया गया है। इसमें हराम सामग्री जैसे कि मरे हुए जानवर या पशु का कोई हिस्सा आदि शामिल नहीं है। कुछ शाकाहारी मिठाइयां भी इसमें शामिल हैं। चूंकि भारत से बड़ी मात्रा में खाद्य प्रॉडक्टसों का निर्यात सिंगापुर, मलेशिया, खाड़ी देशों और कई अंतरराष्ट्रीय बाजारों में होता है, जहां बड़ी संख्या में इस्लामिक आबादी है। ऐसे में देश की अधिकतर कंपनियां अपने प्रोडक्ट के लिए 'हलाल सर्टिफिकेशन' करवाती हैं। लेकिन भारत में हलाल प्रमाण पत्र देने के लिए कोई रजिस्टर्ड संस्था नहीं है। कुछ निजी कंपनियां और एजेंसियां व्यक्तिगत तौर पर कंपनियों को हलाल सर्टिफिकेट मुहैया कराती हैं। एक कंपनी हलाल इंडिया अपनी वेबसाइट पर दावा करती है कि वह किसी भी प्रॉडक्ट को लैब टेस्टिंग और कई तरह के ऑडिट के बाद ही हलाल सर्टिफिकेट देती है। चेन्नै की हलाल इंडिया, दिल्ली की जमीयत उलमा-ए-हिंद हलाल ट्रस्ट और मुंबई की हलाल काउंसिल ऑफ इंडिया भी हलाल सर्टिफिकेट बांटती हैं। उधर जमीयत उलेमा-ए-हिंद हलाल ट्रस्ट ने इन आरोपों को 'बेतुका' बताते हुए कहा कि ये उनकी छवि बिगाड़ने की कोशिश है। ट्रस्ट इस तरह की भ्रामक जानकारियों के खिलाफ़ क़ानूनी कदम उठाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि ट्रस्ट सभी तरह के सरकारी नियमों का पालन करता है। ट्रस्ट के अनुसार विश्व में हलाल उत्पादों का बाज़ार 3.5 ट्रिलियन डॉलर का है और मुस्लिम देशों में इनके निर्यात से भारत को भी लाभ होता है। यहां सवाल यह है कि हलाल सर्टिफिकेट देने के लिए अभी तक सरकार ने कोई कानूनी संस्था क्यों नहीं बनाई है? हलाल पत्र बांटने वाली निजी कंपनियों पर बैन लगाने के साथ साथ सरकार को इस व्यवसाय के नियमन के लिए जरूरी कानून और संस्थाएं बनानी चाहिए उनका पालन सुनिश्चित करना चाहिए ताकि संदेह की सुई को हटाया जा सके। हलाल का मामला मुस्लिम धार्मिक आस्था से जुड़ा है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि वह इसे गंभीरता से लेकर हलाल प्रमाण पत्र की वैधता को भी स्थापित करे।

राजनीति

जावेद अनीस

लेखक स्तंभकार हैं।

क्या 'फीनिक्स' बनकर उभरेंगे शिवराज?

मध्यप्रदेश को भाजपा के सबसे मजबूत किलों में से एक माना जाता है, यहाँ जनसंघ के जमाने से ही उसका अच्छा-खासा प्रभाव है. यहाँ उसके शिवराजसिंह चौहान जैसे मजबूत क्षत्रप पिछले 18 सालों से प्रदेश की सत्ता में शीर्ष पर बने हुये हैं. दूसरी तरफ कांग्रेस है जो लगातार हार की हैट्रिक बनाने के बाद 2018 में सत्ता वापसी में सफल रही थी लेकिन 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के कारण राज्य में फिर से बीजेपी की सरकार बन गई थी. इस प्रकार पंद्रह साल बाद सत्ता में लौटी कांग्रेस पंद्रह महीने ही चल पायी वही भाजपा की जोड़-तोड़ के सहारे फिर से वापसी हो गयी थी.

2023 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर दोनों पार्टियाँ आमने-सामने हैं, लेकिन मुकाबला इतना करीबी लग रहा है कि बड़े से बड़ा चुनावी विश्लेषक ठोस भविष्यवाणी करने की स्थिति में नहीं है.

मोदी के खड़ाऊ के सहारे भाजपा का चुनावी अभियान- करीब 18 साल मुख्यमंत्री रहने के बावजूद शिवराज सिंह चौहान को उनकी पार्टी ने मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित नहीं किया है बल्कि वो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ रही है, इसे सामूहिक नेतृत्व का नाम दिया जा रहा है. पार्टी कह रही है कि मुख्यमंत्री कौन होगा यह चुनाव के बाद तय होगा. पार्टी में करीब आधा दर्जन मुख्यमंत्री के दावेदार नजर आ रहे हैं उनमें शिवराज भी एक हैं.

बहरहाल 'एमपी के मन में मोदी, मोदी के मन में एमपी' भाजपा का केन्द्रीय चुनावी नारा है. इस नारे को अमली जामा पहनाने के लिए पार्टी ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है. इस विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अपने 7 सांसदों को मैदान में उतारा है जिसमें दिमनी से नरेन्द्र सिंह तोमर, नरसिंहपुर से प्रहलाद पटेल, निवास से फग्गन सिंह कुलस्ते जैसे केन्द्रीय मंत्री और बाकी सांसदों में रीति पाठक, राकेश सिंह, राव उदयप्रताप और गणेश सिंह शामिल हैं. इस भारी भरकम सूची में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय का नाम भी है जिन्हें इंदौर की एक विधानसभा सीट से उतारा गया है. जाहिर है भाजपा यह चुनाव शिवराज नहीं बल्कि केन्द्रीय नेतृत्व की छाया में लड़ रही है जिसमें अगर भाजपा जीतती है तो श्रेय के साथ मुख्यमंत्री भी मोदी के पसंद का होगा और अगर भाजपा हारती है तो इसका ठीकरा शिवराज के सर ही फूटेगा.

'फीनिक्स' शिवराज- भाजपा के अंदरूनी जानकार कहते हैं कि इस चुनाव के बाद शिवराज को साइड लाइन करने की पूरी तैयारी कर ली गयी है. लेकिन शिवराज अपनी पोजिशन छोड़ने को तैयार नहीं है वे इस प्रकार से खूंटा गाड़ कर बैठ गये हैं कि उन्हें हिलाना मुश्किल है. चूंकि इस बार भाजपा उनके चेहरे पर चुनाव नहीं लड़ रही है इसलिए उन्हें भी इस बात का अंदाज है कि अगर जीत होती है तो भी इस बार उनका मुख्यमंत्री बनना मुश्किल होगा लेकिन इसके बावजूद भी वे अपनी तरफ से खुद को मुख्यमंत्री के दावेदार के तौर पर ही पेश कर रहे हैं और जनता के बीच जाकर खुद को सीएम बनाने के लिए वोट मांग रहे हैं. इस पूरे चुनाव में एक तरफ भाजपा का चुनावी अभियान, जो प्रधानमंत्री के चेहरे और सामूहिक नेतृत्व के सहारे

चलाया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ शिवराज सिंह चौहान का अपना चुनावी अभियान है जिसमें वे खुद को चेहरा और भावी मुख्यमंत्री बताते हुये कह रहे हैं कि 'पहले लाड़ली लक्ष्मी योजना बनाई, फिर लाड़ली बहना योजना बनाई अब मेरा यह संकल्प है कि हर बहन को 'लखपति बहना' बनाऊंगा'.

शिवराज सिंह चौहान को भाजपा के सबसे मजबूत और लोकप्रिय मुख्यमंत्रियों में से एक यूं ही नहीं माना जाता है. वे भाजपा के उन चुनिन्दा मुख्यमंत्रियों में शामिल हैं जो पार्टी में मोदी-शाह के वर्चस्व के इस दौर में भी अपनी अलग पहचान और जमीन को बचाये रखने में कामयाब रहे हैं. पिछले करीब दो दशकों के दौरान प्रदेश भाजपा संगठन में उनके समकक्ष कोई दूसरा नेता खड़ा नहीं हो सका है. हालांकि उन्हें केवल बाहर से ही नहीं बल्कि भाजपा के अंदर से भी घेरने की कोशिश की गयी है फिर भी वे हर चुनौती से पार पाने में कामयाब रहे हैं.

इसलिये इस बार के विधानसभा चुनाव में अगर भाजपा हारती भी है तो शिवराज बने रहेंगें. मध्यप्रदेश में भाजपा को धीरे-धीरे शिवराज सिंह चौहान के आभामंडल से बाहर किया जा रहा है लेकिन फिलहाल पार्टी के पास मध्यप्रदेश में शिवराज के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है. इसलिए हार हो या जीत उनकी सारी जद्दोजहद हिंदी हृदय प्रदेश की जमीन पर अपने पकड़ और प्रासंगिकता बनाये रखने की होगी. अपने एक चुनावी भाषण में खुद की तुलना 'फीनिक्स पक्षी' करते हुये जब वे कहते हैं कि 'अगर मैं मर भी गया तो राख के ढेर में से फीनिक्स पक्षी की तरह दोबारा उठ खड़ा हो जाऊंगा', तो भले ही उनके निशाने पर कांग्रेस रही हो लेकिन उनका इरादा साफ़ नजर आता है.

कमलनाथ को 'खुला हाथ'- मध्यप्रदेश में पहली बार कांग्रेस इतना केन्द्रित होकर चुनाव लड़ रही है. ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के बाद ऐसा लगता है कि कमलनाथ के सामने सारे क्षत्रप नेपथ में चले गये हैं. कहने को तो कमलनाथ और दिग्विजय सिंह की जोड़ी को जय और वीरू की जोड़ी बताया जा रहा है लेकिन दिग्विजय सिंह की भूमिका भी परदे के पीछे ही है. कांग्रेस की तरफ से अकेले कमलनाथ ही मैदान में नजर हैं. इस बार चेहरा, रणनीति सब कुछ उन्हीं का है. कुल मिलाकर मध्यप्रदेश में उन्हें 'खुला हाथ' मिला हुआ है और खुद आलाकमान भी उनके हिसाब से काम करने की कोशिश कर रहा है.

कांग्रेस की तरफ से मुख्यमंत्री पद के वे अकेले दावेदार है जिनके मुकाबले ना तो कांग्रेस और ना ही भाजपा में कोई चेहरा है और इस बार के चुनाव में यही सबसे बड़ी ताकत भी है. पिछली बार के चुनाव की तरह इस बार भी उन्होंने वचन पत्र जारी किया है जिसमें लोक लुभावन वादों की भरमार है.

मई 2018 में मध्यप्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर कमलनाथ के आने के बाद से कांग्रेस लगातार नरम हिन्दुतत्व के रास्ते पर आगे बढ़ी है और इस दौरान विचारधारा के स्तर पर वो भाजपा की 'बी टीम' नजर आती है. पिछले दिनों कमलनाथ ने अपने एक इंटरव्यू में राममंदिर का श्रेय कांग्रेस को देते हुए कहा है कि राजीव गांधी ने मंदिर का ताला खुलवाया था, अपने चुनावी तैयारियों के तहत वे बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री के कई कार्यक्रम भी करा चुके हैं.

ऊंट किस करवट बैठेगा?- चुनाव से कुछ ही महीनों पहले शिवराज सिंह चौहान की सरकार द्वारा 'लाड़ली बहना योजना' की घोषणा की गयी है और पूरे चुनावी अभियान के दौरान भाजपा का सारा जोर अपने 18 साल के शासन की उपलब्धियों को बताने के बजाये इस नये नवेले योजना के प्रचार और उसका श्रेय लेने में रहा है. शायद भाजपा मध्यप्रदेश में अपने 18 साल के शासन की किसी एक उपलब्धि और चेहरे को पेश कर पाने की स्थिति में हैं इसलिए उसका जोर 'मोदी के चेहरे, राम मंदिर और लाड़ली बहना योजना' पर है.

हालांकि गृह मंत्री अमित शाह मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य से बेमिसाल राज्य बनाने का दावा करते हैं लेकिन इसपर ज्यादा जोर नहीं दिया गया है. मध्यप्रदेश में असल मुद्दों की कमी नहीं है जिसपर ध्यान देने की जरूरत है, जैसे कि प्रदेश में अर्थव्यवस्था की हालत बहुत पतली है लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'राजस्थान में कांग्रेस को चुना तो सर तन से जुदा के नारे लगे, अब मध्यप्रदेश को बचाना है' जैसी बातें कहकर ध्यान कही और ले जाने की कोशिश की गयी है.

बहरहाल मुकाबला बहुत दिलचस्प और करीबी है, आगामी तीन दिसंबर के नतीजे ना केवल मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री का नाम तय करेंगें बल्कि इससे दोनों प्रमुख पार्टियों के अंदरूनी समीकरण भी नये सिरे से तय होने वाले हैं.

क्रिकेट

विजय रांगणेकर

(लेखक पूर्व बैंक अधिकारी व वरिष्ठ खेल समीक्षक हैं)

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट यानि अटूट मनोबल और उन्मुक्त खेल

आबादी के लिहाज से छोटे से देश-आस्ट्रेलिया ने यूँ तो टेनिस, गोल्फ, तैराकी, बिलियार्ड्स, बाक्सिंग और एथेलेटिक्स में एक से बढ़कर एक विश्वस्तरीय खिलाड़ी दिए हैं, किन्तु सही रूप से क्रिकेट ने ही आस्ट्रेलिया को एक खेल राष्ट्र का दर्जा दिलाया है. क्रिकेट ने ही आस्ट्रेलिया वासियों में राष्ट्रीयता की भावना पैदा की है. विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्सलैंड, तस्मानिया, साऊथ आस्ट्रेलिया और वेस्टर्न आस्ट्रेलिया- ये छः राज्य किसी ज़माने में अपनी विशिष्ट पहचान बनाये रखने को आतुर थे. लेकिन क्रिकेट ने इनमे भावनात्मक एकता की बुनियाद रखी.

राजनितिक दृष्टि से एक राष्ट्र के रूप में उभरने के पूर्व ही आस्ट्रेलिया में राष्ट्रीय भावना के संस्कार क्रिकेट के जरिये पड़ चुके थे. 21 अगस्त 1882 को 'ऐशेज' का इतिहास रचा गया, जब आस्ट्रेलिया की नौसिखिया समझी जाने वाली टीम ने इंग्लैंड को उसी के मैदान पर हराकर एक सर्वथा दुर्लभ कीर्तिमान बनाया. यह काम आस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों ने किया था न कि विक्टोरिया या साऊथ वेल्स के खिलाडियों ने.

बस यही एहसास था जिसने खिलाड़ियों को भावनात्मक रूप से एकजूट कर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया. अपना देश छोड़कर भाग्य आजमाने के लिए दूरस्थ प्रदेशों में जाकर बसने वाले स्वभाव से ही साहसी और निर्भीक होते है. उनकी विशेषता जीवटता, संघर्ष और जीत की लालसा रही है.

जय पराजय, संघर्ष और विकास के लम्बे दौर से गुजरने वाली आस्ट्रेलियाई क्रिकेट की परम्परा काफी प्रतिष्ठित और गौरवपूर्ण रही है। प्रथम टेस्ट, शताब्दी टेस्ट, टाई टेस्ट, विश्व विजेता जैसी गर्वीली उपलब्धियों को इतिहास में समेटे अनेक चमत्कारिक और प्रतिभा संपन्न खिलाडियों का विलक्षण प्रदर्शन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि दुनिया के क्रिकेट नक्शे पर प्रत्येक समय पर आस्ट्रेलिया का विशिष्ट सम्मानजनक स्थान रहा है. ये बात नहीं कि आस्ट्रेलिया टीम ने उतार-चढ़ाव नहीं देखे. वे कई बार हारे और काफी बुरी तरह हारे लेकिन हारते रहने की अवधि कभी भी लम्बी नहीं रही. उनके खेल में एक जुझारूपन, नैसर्गिक प्रतिभा, किलर इंस्टिक्ट और जीत के लिए अंत तक संघर्ष करने की भावना रही है. वे कमजोर टीम से नहीं हारते, अलबत्ता अनपेक्षित रूप से जरूर हार जाते हैं. लेकिन तुरंत अपनी गलतियों में सुधार करते हुए टीम अपने फार्म में लौट आती है.

दान का सुपात्र

वक्रोक्ति

विजय कुमार सक्सेना

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मैं गीत संगीत में विशेष रुचि रखता हूं यूट्यूब खोला तो अचानक से एक संदेश भारी भरकम आवाज में सुनाई पड़ा आज आप कुछ भी दान करेंगे तो वह दान आपको सीधे 'स्वर्ग लोक' ले जाएगा। ..थोड़ा संकोच हुआ कि अभी कोई जाने की जल्दी तो है नहीं परंतु फिर यह सोचा कि आज का कोई विशेष दिवस है तो क्यों ना इसका लाभ उठा लिया जाए और तुरंत मैंने अपनी पेंट की जेब से 101/- रुपए निकाले और उनको मोड़कर ऊपर की जेब में रख लिए कि आज यह किसी ऐसे व्यक्ति या को दान दूंगा जो इसका सच में उचित भागीदार होगा । अब यह सोचकर मैं निकल पड़ा थोड़ा आगे गया तो देखा कि एक मंदिर के पास कुछ लोग बैठे हुए हैं मैंने तत्काल जेब में हाथ डालकर वह 101/- निकाले तभी क्या देखता हूं कि एक सेठ जी और सेठानी ढेर सारा खाने का सामान कपड़े और पता नहीं पैकेट में कुछ सामग्री उनको दे रहे थे मैंने सोचा कि जब इनको इतना सब सेठ जी दे ही रहे हैं तो इसके सामने मेरे 101 /-रु पए की क्या बिसात मैंने तुरंत पैसे मोड़कर जेब में रख लिए और आगे बढ़ गया थोड़ी दूर गया तो फिर देखा कि गंदे कपड़ों में एक व्यक्ति दीवार से टिक कर बैठा हैं मैंने सोचा है यह वाकई में इस दान का सही पात्र है और मैं गाड़ी रोक जैसे ही उस तक पहुंचा मुझे एक अजीब सी दुर्गंध आई मैंने दीवाल के उस तरफ देखा तो लिखा था अहाता मेरे पैर अटक गए। मैं तुरंत गाड़ी पर बैठ गया मैंने सोचा कि यदि मैं इसको यह पैसे देता हूं तो निश्चित तौर पर यह उसका उपयोग भोजन में तो नहीं करेगा हां कुछ ऐसा द्रव्य जिसका यह आदि नजर आ रहा हैं और यह लेटा हुए हैं उसी में यह इन्वेस्टमेंट कर देगा। मुझे ख्याल आया कि वह पंडित जी की जो आवाज़ थी उसमें बैकुंठ जाने की बात थी। नहीं ...नहीं ...मैं यह रुपए इस कार्य के लिए नहीं दे सकता। मैं तुरंत आगे बढ़ गया काफी दूर जाने के बाद मुझे एक स्थान पर एक नौजवान व्यक्ति सोता हुआ सा नजर आया मुझे लगा यह भूखा है गरीब है क्यों ना मैं इसके सिरहाने यह रुपए रख दूं और मैं जैसे ही उसके सिरहाने में रुपए रखने की कोशिश की तो देखा कि वहां एक चिलम पड़ी हुई थी और यह महाशय बार-बार चिलम के अंदर उंगली डाल-डाल के सूंघ रहे थे। मैंने कहा ..नहीं ....नहीं... यह भी 'दान का पात्र' नहीं है। फिर आगे चला तो देखा की दो बच्चे रो रहे हैं और उनकी मां उनको पीट रही है मैं वहीं से चिल्लाया यह क्या कर रही हो क्यों पीट रही हो तो वह औरत ने मेरी ओर ध्यान ही नहीं दिया परंतु टूटे हुए से मकान से उसका आदमी बाहर आया और मुझे लगभग डपट कर बोला तुझे क्या करना चल अपना रास्ता ले । मैंने कहा भाई छोटे बच्चे हैं उन्हें मारना नहीं चाहिए मैंने कुछ देना चाहता हूं वह व्यक्ति बोला की हां हां उनको नहीं मुझे ही दे दो क्योंकि आज मुझे सट्टा खेलना है मैंने अपना माथा पकड़ लिया और तुरंत गाड़ी में किक मारकर आगे बढ़ गया मैंने काफी विचार किया की क्या मुझे दान देने के लिए सुपात्र व्यक्ति मिलेगा? क्या मुझे उसे खोजना चाहिए ? क्या मुझे दान को गुण और अवगुण के आधार पर देना चाहिए? मैं अपने आप से प्रश्न करता और उत्तर मुझे प्राप्त नहीं हो रहा था । तभी मैंने देखा एक व्यक्ति मकान के सामने डफली बजा बजाकर मांग रहा है मैं उसके पास जाकर रुका और मैंने ध्यान से उसको सुना तो वह कुछ इस प्रकार गा रहा था 'ले लो ले लो दुआएं भूके गरीब की ।'

बन जायेगी किस्मत यकीन से।। इन दुआओं में आमिर भी बना रहा है। यही है.. यही है.. मेरी अंतरात्मा ने मुझे जागाया, और आवाज लगाई यही वह आदमी है यही वह आदमी है जिसे तुम्हें दान देना चाहिए यही सच्चे मायने में 'दान का सुपात्र है' जो किसी से कुछ नहीं मांग रहा इसमें कोई दोष नहीं है यह गागा के दरवाजे दरवाजे दुआएं बांट रहा है। इस दान का सच्चा पात्र और कोई नहीं हो सकता मैं आवाज़ लगाई भैया ओ भैया.. वह इतना मग्न होकर दुआएं बांट रहा था उसने मेरी आवाज ही नहीं सुनी मैंने उसे कंधे पर हाथ रखा, तो वह बोला हां बाबू सदा सुखी रहो तुम्हारा भंडार भरा रहे, तुम्हारी लंबी उम्र हो, तुम्हारे बाल बच्चे खुश रहे और मैंने उसको 101/- दिये और मेरी आंखों में खुशी की चमक थी । क्योंकि मुझे दान का सुपात्र व्यक्ति मिल गया था ।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

राजेन्द्र वामन काटदरे

चुनाव के बाद पहला साक्षात्कार

पत्रकार – नेताजी आपको क्या लगता है कितनी सीटें मिलेंगी आपके दल को ।
नेताजी – हमें पूर्ण बहुमत मिलेगा ।
पत्रकार – लेकिन सुपर फास्ट चैनल के सर्वे में तो आपके दल को सिर्फ तीस-बत्तीस सीटें बताई जा रही हैं ।
नेताजी – हमारा इस तरह के सर्वे - फर्वे पर विश्वास नहीं है । हमें यकीन है कि हमें पूर्ण बहुमत मिलेगा ।
पत्रकार – यदि आपका दल जीत गया तो मुख्यमंत्री कौन बनेगा ।
नेताजी – ये तो आलाकमान तय करेगी ।
पत्रकार – आपके दल ने फ्री बिजली-पानी-राशन के साथ महिलाओं, छात्रों तथा बेरोजगारों को मासिक भत्ता देने का वायदा किया है लेकिन इसके लिये पैसा कहाँ से आयेगा ।
नेताजी – वह मंत्रीमंडल की बैठक में तय होगा ।
पत्रकार – लेकिन कुछ तो सोचा होगा ना आपने ।
नेताजी – हमारे राज्य के पास बहुत संसाधन हैं, बहुत पैसा है ।
पत्रकार – लेकिन पिछला बजट तो घाटे का था तथा राज्य पर कई सौ करोड़ का कर्ज भी है सो फ्री फंड का श्रीखंड बांटने का पैसा कहाँ से आयेगा । आप अपना वायदा कैसे पूरा करेंगे यह पहले सोचा नहीं गया क्या ।
नेताजी – हम वायदा जरूर पूरा करेंगे, जरूरत पड़ी तो केन्द्र से पैसा मांगेंगे ।
पत्रकार – यदि केन्द्र से नहीं मिला तो ....
नेताजी – पत्रकार जी, अब बस कीजिये हमें दल की मीटिंग में जाना है, देर हो रही है ।

बहुत अच्छा खेले लड़कों

खेल रंग

पंकज सुबीर

लेखक साहित्यकार हैं।

खेलों का आविष्कार मानव ने जीत या हार के लिए नहीं किया था, अपने मनोरंजन के लिए किया था। और यह बात एकदम सच है कि बीते 46 दिनों में सभी टीमों ने मिल कर दर्शकों का बहुत मनोरंजन किया। रोहित, गिल, विराट, श्रेयस और राहुल ने बल्ले से तो शामी, बुमराह, सिराज, कुलदीप और जडेजा ने गेंद से हम लोगों को रोमांचित बनाये रखा।

आप क्यों 19 नवंबर को ही स्मृतियों में बनाये रखना चाहते हैं ? उससे पहले के मैचों को क्यों नहीं याद रखना चाहते? याद रखिए शामी, सिराज और बुमराह द्वारा बोल्ड होते, स्लिप पर कैच होते और पगबाधा होते बल्लेबाज़, रोहित, विराट, गिल, राहुल और श्रेयस द्वारा लगाये गये लम्बे-लम्बे छक्के, शतक और अर्धशतक। लेकिन इसमें हमारी ग़लती नहीं है, हमारी कंडिशनिंग की ग़लती है।

हमारी फ़िल्मों में हमें दिखाया जाता है कि फ़िल्म के अंत में नायक विजयी रहता है और नायक के विजय भाव को अपने अंदर बसा कर हम सिनेमा हॉल से बाहर निकलते हैं। असल में फ़िल्म देखते समय हम नायक के साथ एकाकार हो जाते हैं, जब अंत में नायक जीतता है, तो हमें ऐसा लगता है कि नायक नहीं हम ही जीते हैं। यदि किसी फ़िल्म में नायक अंत में जीतता नहीं है, तो वह फ़िल्म फ़्लाप हो जाती है। भले ही फ़िल्म ने पूरे समय दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया हो। श्रीदेवी और कमल हासन की फ़िल्म 'सदमा' को याद कीजिए। फ़िल्म कमाल की थी, मगर दर्शकों को यह पसंद नहीं आया कि अंत में कमल हासन को बिना पहचाने श्रीदेवी रेल में बैठ कर चली जाती है, कमल हासन स्टेशन पर अपने आपको याद दिलाने के लिए बंदर की तरह नाचता रह जाता है। 19 नवंबर के अंत से पूरे विश्वकप के उल्लास को कम मत कीजिए, हमारी टीम ने हमारा भरपूर मनोरंजन किया है बाक़ी मैचों में, यह बात याद रखिए।

हर दिन हर किसी का नहीं होता, कल भारतीय टीम का दिन नहीं था। अब दिन होता तो ये 240 रन भी बहुत थे डिफेंड करने के लिए। तब, जब आपके पास सारे विश्वस्तरीय गेंदबाज़ हों। मुझे याद आ रहा है कि जब मैं इछावर में रहता था और अपनी क्रिकेट टीम 'प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र इछावर' का कप्तान भी था। तब हम 20-20 मैच ही खेलते थे। एक बार हम इछावर के पास गाँव ब्रजेश नगर में टूर्नामेंट का फाइनल खेल रहे थे और पहले बैटिंग करते हुए हम 18 रन पर आल आउट हो गये थे। गेंद ज़मीन पर पड़ने के बाद ज़मीन से चिपकती हुई आ रही थी। हमने सोचा कि अब तो क्या जीतेंगे, मगर हमारे स्पिन बॉलर मनीष ने मुझसे कहा- 'छुट्टू (मेरा घर का नाम, इछावर के दोस्त आज भी मुझे पंकज सुबीर नाम से नहीं जानते, सब छुट्टू नाम से ही जानते हैं) चिंता की बात नहीं है, उनकी गेंदें सुर्रा (ज़मीन से चिपकती हुई) जा रही हैं, तो हमारी भी जायेंगी।' मनीष सुर्रा विशेषज्ञ था और दिन हमारा था और सामने खेल रही सीहोर की मज़बूत टीम को हमारी छोटे क़स्बे इछावर की टीम ने 9 रन पर आल आउट कर ट्रॉफ़ी जीत ली थी। कल भारत का दिन नहीं था, कल का दिन ऑस्ट्रेलिया का था। होता तो बुमराह, शामी, सिराज पहले पन्द्रह ओवर में ही मैच को हमारे पक्ष में निर्णायक रूप से झुका देते। कोई भी हारने के लिए नहीं खेलता, सभी जीतने के लिए ही खेलते हैं, मगर खेल का नियम है कि जीतेगा कोई एक ही।

अति महत्वाकांक्षी माता-पिता के बच्चे जब प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल होते हैं, तो वह असल में माता-

पिता की असफलता होती है। माता-पिता जब अपनी इच्छाओं का बोझ बच्चों के कंधों पर रख देते हैं तो बच्चों के क़दम लड़खड़ा जाते हैं। कल की हार टीम की हार नहीं है, हम क्रिकेट प्रेमियों की हार है, जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं का बोझ टीम पर रख दिया। हमें पागलों की तरह केवल और केवल जीती ही चाहिए थी। भारत में मैच, सवा लाख से अधिक पगलाए हुए दर्शकों की स्टैंड्स में उपस्थिति, इतने कारण थे कि यह तो होना ही था। एक और घटना सुनाता हूँ, एक बार हमारी टीम इछावर की प्रतिष्ठित 'मुरलीधर जोशी स्मृति प्रतियोगिता' के फाइनल में पहुँच गयी थी। मैच इछावर में ही था, पापा की पोस्टिंग वहाँ ब्लॉक मेडिकल ऑफ़िसर के रूप में थी। टीम में हम सब अस्पताल कैम्पस के ही बच्चे थे, जिनके पिता या माँ पापा के अधीनस्थ कार्यरत थे। पापा हौसला अफ़ज़ाई के लिए मैच देखने पहुँच गये। हम दोनों भाइयों के लिए पापा और बाक़ी बच्चों के लिए बड़े साहब दर्शकों में आ चुके थे। हम इतने नर्वस हुए कि जीतने की पूरी संभावनाओं के बाद भी हार गये। सवा सौ करोड़ से ज़्यादा लोगों की उम्मीदों का बोझ ग्यारह लड़कों पर था, यह तो होना ही था।

मैंने अभी तक जितने भी विश्वकप देखे हैं उनमें यह सबसे रोमांचक और सबसे दर्शनीय था। (जबकि मैं आईपीएल के कारण क्रिकेट देखना लगभग छोड़ चुका था।) इसकी बहुत सी बातें यादों में बनी रहेंगी और उनकी बातें हम करते रहेंगे। आइए इंतज़ार करते हैं 2027 के विश्व कप का। शायद उसमें विराट, रोहित, शामी और बुमराह नहीं हों, लेकिन उनकी जगह दूसरे होंगे। 'कल और आयेंगे नगूमों की खिलती कलियाँ चुनने वाले, मुझसे बेहतर कहने वाले तुमसे बेहतर सुनने वाले', खिलाड़ी असफल होने के बाद जब मैदान पर रोता है, तब वह असफलता पर नहीं रो रहा होता है, वह असल में हम दर्शकों की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाने की निराशा के कारण रो रहा होता है। हमें ही बढ़ कर कहना होगा 'कोई बात नहीं बच्चों, कप हाथ में नहीं आया कोई बात नहीं, पर हमारे लिए तुम ही विजेता हो।' आइए अपने खिलाड़ियों द्वारा किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन का उल्लास मनाते हैं। इनमें से बहुत से खिलाड़ियों का यह अंतिम विश्वकप है, आइए उनको कहते हैं कि खेल का अर्थ आनंद होता है और इस विश्वकप में आपके कारण हमने भरपूर आनंद लिया। 2027 में जब हम विश्वकप देख रहे होंगे तब आपको बहुत मिस करेंगे। बहुत अच्छा खेले लड़कों, बहुत अच्छा खेले। हमें तुमसे कोई शिकायत नहीं है। कुछ दिन आराम करो, फिर मिलते हैं।

बहुत हुआ क्रिकेट, अब फुटबॉल-हॉकी को प्रोत्साहित करें !

मुद्दा

गिरीश पंकज

लेखक स्तंभकार हैं।

क्रिकेट हमारे देश में खुमार की तरह चलता है। क्रिकेट के प्रति प्रेम के चलते अभी हमने देखा कि एक दिवसीय विश्व कप मैच को देखने के लिए लोगों ने हजारों रुपये खर्च करके अहमदाबाद की यात्रा की। एक सज्जन बता रहे थे कि जब उन्होंने अपने भतीजे से पूछा कि अहमदाबाद तो जा रहे हो लेकिन वहां सारे होटल बुक हैं। रहने की कोई जगह नहीं मिलेगी, तो लड़के ने कहा, 'मुझे उसकी चिंता नहीं। मैं बीमारी का बहाना करके किसी अस्पताल में जाकर भर्ती हो जाऊँगा।' तो यह जुनून है लोगों के मन में ! दुर्भाग्य की बात है कि ऐसा जुनून कभी फुटबॉल जैसे गतिशील खेल के लिए नहीं होता। आज भारत का नाम फुटबॉल के मामले में दुनिया में कहीं भी नहीं है। हमारी सरकारों ने कभी फुटबॉल को महत्व दिया ही नहीं। हर कोई क्रिकेट का दीवाना है यही कारण है कि जब ऑस्ट्रेलिया के साथ एक दिवसीय क्रिकेट के अंतिम मुकाबले में भारत पराजित हो गया तो ऐसा महसूस हुआ जैसे पता नहीं हमने क्या खो दिया है। कल तक जिन खिलाड़ियों को हम सम्मान दे रहे थे, उन खिलाड़ियों को गरियाने लगे। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में फाइनल खेला जा रहा था, उसे देखने के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मौजूद थे,तो उसको लेकर तरह-तरह की नकारात्मक बातें लोग करने लगे । गोया मोदी जी की उपस्थिति के कारण हार गए। खेल तो खेल होता है। दो टीम मैदान में उतरेगी, तो स्वाभाविक है कि कोई एक जीतेगी। और जो टीम जीतती है, निःसंदेह उसका खेल पराजित टीम से तो बेहतर होता ही है। 19 नवंबर के मैच को मैंने भी ध्यान से देखा। जब भारतीय टीम बैटिंग कर रही थी, तभी मुझे लगा था भारतीय टीम शायद हार जाएगी । टीम के कप्तान रोहित शर्मा जिस लापरवाह तरीके से खेल रहे थे, उसे देखकर मैंने अपने बेटे से कहा ही था कि देखना, थोड़ी देर बाद यह कैच आउट हो जाएगा। और कुछ देर बाद ही वह कैच आउट ही हुआ। इसके पहले रोहित तीन चार-बार उनके कैच आउट होते-होते बचा था। हमारी भारतीय टीम के बारे में हम सब ने महसूस किया है कि वह शुरुआती मैच तो जबरदस्त खेलती है, जीतती भी है, लेकिन फाइनल मैच में वह कुछ अतिरिक्त तनाव पाल लेती है। दबाव में आ जाती है। इसलिए जैसा खेल उसे खेलना चाहिए, वैसा खेल नहीं पातीम अहमदाबाद के मैच में भी ऐसा ही हुआ। जितने रन बनने चाहिए उससे काफी काम बने। प्रायः शतक जमाने वाले विराट कोहली भी कमाल नहीं दिखा सके। रोहित शर्मा भी। शुभमन गिल तो चार रन बना के पैवेलियन लौट गए। अगर भारतीय टीम 300 से ज्यादा रन बना लेती तो बहुत संभव है ऑस्ट्रेलिया की टीम को पराजित किया जा सकता था । हमारे बॉलरों ने शुरुआत में तो काफी अच्छा खेला। 47 रन तक आस्ट्रेलिया के तीन खिलाड़ियों को उन्होंने आउट कर दिया। लेकिन लेकिन बाद में वे विफल रहे। ट्रेविस हेड को अंतत आउट नहीं कर पाए, जो मैन ऑफ द मैच बने। जिन्होंने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 137 रन बनाए। अगर हमारे गेंदबाज ट्रेविस हेड को आउट कर देते तो बहुत संभव है, जीत का सेहरा भारतीय टीम के सर पर बंध जाता, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। खैर, खेल तो खेल होता है। ऑस्ट्रेलिया की टीम के दमदार खेल ने भारत को 6 विकेट से हरा दिया। छठी बार वह विश्व विजेता बनी। भारत केवल दो बार विश्व चैंपियन बन सका । 1983 में और 1911 में। बहरहाल, आने वाले समय में हम सब उम्मीद करते हैं कि हमारी टीम बेहतर प्रदर्शन करके विश्व विजेता बनेगी। यहां मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि जिस तरह से हम क्रिकेट के मोह में फंसे हुए हैं, और धीरे-धीरे इसे सटोरियों का भी खेल बना दिया गया, तब यह जरूरी है कि हम लोग फुटबॉल और हॉकी को भी खूब प्रोत्साहित करें। क्रिकेट खिलाड़ियों पर तो बेहिसाब दौलत बरसती है, लेकिन फुटबॉल और हॉकी खिलाड़ियों को बिल्कुल महत्व नहीं दिया जाता। अगर हम फुटबॉल खिलाड़ियों को भी महत्व दें, तो उम्मीद करता हूँ कि आने वाले समय में हम भी विश्वस्तर के फुटबॉल खिलाड़ी दे सकते हैं। भारत देश के लोग फुटबॉल प्रेमी तो हैं लेकिन सरकारी स्तर पर इसे बहुत कम प्रोत्साहित किया जाता है। इस दिशा में विचार करने की जरूरत है।

अंततः कहूँगा कि एक दिवसीय विश्व कप 2023 के फाइनल में भारतीय टीम के पराजित होने पर एक भारतीय होने के नाते मुझे भी गहरा दुख है। लेकिन अपने ही दो शेरों से अपनी बात यहीं खत्म कर रहा हूँ कि

आपकी शुभकामनाएँ साथ हैं
क्या हुआ गर कुछ बलाएँ साथ है
हारने का अर्थ यह भी जानिए
जीत की संभावनाएँ साथ हैं।

चुनावी संग्राम के बाद की चर्चाएं कितनी महत्वपूर्ण

सामयिक

सुसंस्कृति परिहार

लेखिका स्तंभकार हैं।

17 नवम्बर को मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव सम्पन्न होने के बाद कयासों का दौर जारी है। दोनों प्रमुख पार्टियां अधिक हुए मतदान को दो तरह से देखने की कोशिश कर रहीं हैं।सत्ता पक्ष मान के चल रहा है महिलाओं की लंबी कतारें और भारी मतदान भाजपा को जिता रहा है वहीं कांग्रेस का कहना है अधिक मतदान होना हमारी जीत बयां कर रहा है।उधर इस स्थिति को देखकर कांग्रेस को भारी मतों से जिताने का दावा करने वाले चैनल अब कांटे की टक्कर की बात कह रहे हैं।

जबकि जनता के बीच जागरुक लोगों का ये ख्याल है कि लोग भाजपा की गलत नीतियों, मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी से इस हद तक ऊब चुके थे इसलिए उसकी खिलाफ़त बड़े पैमाने पर होती नज़र आ रही है।उनका कहना ये भी है पुरानी पेंशन व्यवस्था लागू करने का जो काम कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कर दिखाया है उससे कर्मचारियों की जान में जान आई है वे इकतरफा कांग्रेस को वोट किए है। बदलाव की आंधी है। तूफ़ान पूर्व की शांति पसरी हुई है। परिणाम कांग्रेस को सत्ता सौंप देने वाले हैं।

दूसरी ओर मोदी की भक्ति में लीन कार्यकर्ता डंके की चोट पर बहुमत से जीतने का दावा करते नज़र आ रहे हैं उनकी संख्या काफी घटी है लेकिन वे मुखर होकर यह कहते नहीं थक रहे आएगा तो मोदी ही।यानि कमल ही। कैसे आएगा पर वे साफ़ कहते हैं जैसे 2014 और 2019में आया। उन्हें यह भी नहीं मालूम कि किसका चुनाव है? मोदी के हर विधानसभा में हुए कार्यक्रम ने उनके दिल दिमाग में मोदी फिट कर दिया है। यही मोदीजी की चाहत भी थी। सिर्फ एक तानाशाह की तरह एक चेहरा।

कुछ तर्क शील जुगाड़ू युवा इस जीत की तकनीक भी उजागर करते हैं हमने अपने बूथ पर जबरन 100फर्जी वोट डाले। हमने सेंटिंग पहले कर रखी थी।मर चुके और बाहर गए लोगों का वोट फटकार दिया। एजेंट को खिला पिला दिया बस। कर्मचारी तो सरकारी थे।बड़ा आश्चर्यजनक लगता है सुनकर लेकिन यह हुआ है वह शान बघारता हुआ कहता है। सच यह है चंद दबंगों के दवाब में ही यह संभव है। खुरई क्षेत्र में सर्वाधिक फर्जी मतदान की ख़बर मिली है। जबकि दिमनी में वोटर्स को वोट डालने निकलने ना देने की बात सामने आई है। इसे मान भी लें तो दबंग प्रत्याशी इक्का दुक्का जीत जाएं तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। सागर कलेक्टर और एसपी पर खुलेआम लोग भाजपा के पक्ष में वोट डलवाने की शिकायत चुनाव आयोग से किए हैं। लेकिन होने वाला कुछ नहीं। एक थैले के चट्टे-बट्टे हैं यह। सागर नगर में फर्जी मतदान की जबकि कोई ख़बर नहीं। ये ग्रामीण क्षेत्रों में ही केन्द्रित रहा है।

बहरहाल मतदान बाद कुछ सत्य उजागर हो ही जाते हैं लेकिन मतदाताओं पर यकीन रखना ही होगा भारी बहुमत होने पर ये चोरियां और चतुराई कारगर नहीं होती। सुना है ईवीएम इस बार सही परिणाम देने वाली है ताकि लोगों का विश्वास इसमें बना रहे और यह गुल 2024 लोकसभा में खिला सके। फिलवक्त चंद जगहों को छोड़कर उम्मीद है सही परिणाम सामने आएंगे।

भाजपा की बढ़ती बौखलाहट वोटिंग होने के बाद भी रहली विधानसभा कांग्रेस की प्रत्याशी ज्योति पटेल साथ जो हुआ,में साफ़ नज़र आती है। इससे पहले छतरपुर में की गई कांग्रेस कार्यकर्ता की हत्या, इंदौर में कांग्रेस नेताओं पर एफआईआर, सीधी,सतना आदि में हुए तमाशे भी इस बात की ओर इशारा करते हैं। भाजपा की जीत आसान नहीं चुप जनता कांग्रेस के लिए वरदान साबित हो सकती है। भक्त इस बात से अनजान हैं कि मोदीशाह ही इस वक्त मध्यप्रदेश भाजपा के बड़े शत्रु है।संघ ही शिवराज सरकार पर मेहरबान है।

बहरहाल तीन दिसम्बर ही निर्णायक होगा।याद आता है 2003 का विधानसभा चुनाव जब कांग्रेस का इसी तरह का बुरा हाल था तब भाजपा जीती थी बीस साल बाद 2023 में मामला उल्टा नज़र आ रहा है भाजपा की हालत पतली है और 3 दिसंबर को ही परिणाम आ रहे हैं।

विज्ञान और आध्यात्म एक-दूसरे के पूरक

दृष्टिकोण

डॉ. पुष्पा चौधरी

असिस्टेंट प्रोफेसर, जन्तु-विज्ञान

भारतीय दर्शन चेतनावाद से निर्मित है। सदियों से भारतीय दार्शनिकों ने चिंतन, चेतन और तर्कवाद से विभिन्न सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जो मानव कल्याण हेतु लाभकारी सिद्ध हुए हैं। कलांतर में मनुष्य अपने पूर्वजों के सिद्धांत और विचारों को वास्तविकता में बदलने हेतु प्रयोगात्मक अध्यन विकसित किया। प्रयोगात्मक अध्यन का संबंध प्रकृति और भौतिकता से है। प्रयोगात्मक कहने का तत्पर विज्ञान और आध्यात्मिकता से भी है। अक्सर विज्ञान और आध्यात्म को परस्पर एक दूसरे के विरोधी और भिन्न देखा जाता है। स्थूल दृष्टि से देखने पर आध्यात्म और विज्ञान सर्वथा भिन्न ही प्रतीत होते हैं । परंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है। विज्ञान और आध्यात्म परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। आध्यात्म और विज्ञान की दिशाएँ, धाराएँ विपरित प्रतीत होती हैं किंतु ऐसा है नहीं। आध्यात्म दीपक है तो विज्ञान उसका प्रज्ज्वलित प्रकाश। वेबर कहते हैं कि 'दर्शन के बिना विज्ञान वैसा है जैसे एकता या संगठन के बिना कोई समूह आत्मा के बिना शरीर,इसी प्रकार विज्ञान के बिना दर्शन ऐसा है, जैसे शहरी के बिना आत्मा' विज्ञान और आध्यात्म का उद्देश्य मनुष्य जीवन को सुख, शांति और समृद्ध बनाना है। आध्यात्म मनुष्य को आंतरिक दृष्टि से समृद्ध संपन्न, आत्मप्रसन्नता का उदय और आत्मबल को मजबूती प्रदान करता है। विज्ञान बाह्य दृष्टि से मनुष्य को संसाधनों से युक्त जीवन को सरल बनाता है। मनुष्य में आतंरिक चेतना को प्रस्फुटित करने वाली शक्ति का नाम अध्यात्म है। वस्तुतः आध्यात्म का लक्ष्य मनुष्य के आंतरिक शक्तियों और सत्प्रवृत्तियों को जाग्रत करके मनुष्य के जीवन में देवत्व के गुणों का अनुभव और आत्म साक्षात्कार करना है। विज्ञान सूक्ष्म कण, पदार्थों और प्रकृति में छिपी शक्तियों का अन्वेषण और नूतन अध्ययनों से भौतिक कष्टों से मुक्ति दिलाकर जीवन को सरल बनाना है। विज्ञान और आध्यात्म सत्य की खोज में निरत हैं। दोनों ही अपने पिछली मान्यताओं के गलत सिद्ध होने पर उसे अस्वीकार करते हैं। आध्यात्म और विज्ञान के सिद्धांतों में परस्पर समानता देखने को मिलती है। दोनों का लक्ष्य अपने गंतव्य मार्ग को प्राप्त करके मनुष्य जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करना है। विज्ञान हमें आध्यात्म से जोड़ता है और आध्यात्म हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करता है। विज्ञान कहता है ब्रहमाण्ड में उपस्थित सूक्ष्म कण पदार्थ कभी नष्ट नहीं होते हैं, बल्कि मूल स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है । आध्यात्म में जीव की आत्मा कभी मृत नहीं होती है। वह एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।

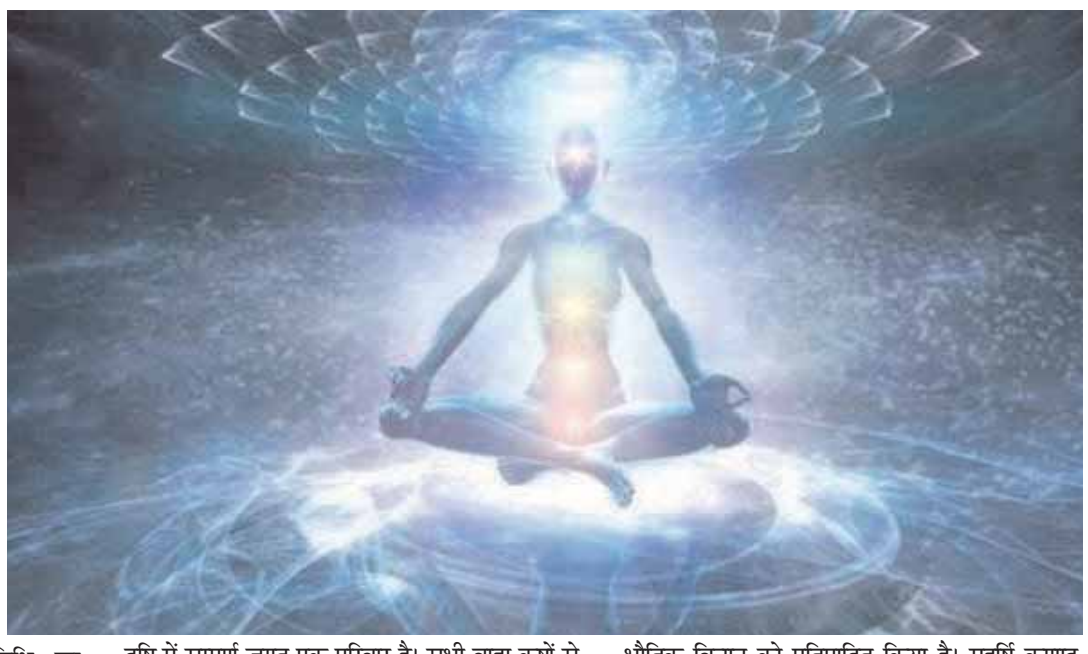

मानव शरीर की समस्त बाह्य क्रियाविधि का विश्लेषणात्मक अन्वेषण विज्ञान करता। मनुष्य के आंतरिक चेतनाओं को जाग्रत करने का कार्य अध्यात्म का करता है। आध्यात्म के सिद्धांतों और विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य विज्ञान करता है। महान वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम कहते हैं कि सृष्टि आध्यात्मिक सिद्धांतों का उसी प्रकार पालन करती है, जिस प्रकार भौतिक शास्त्र और गुरुत्व के नियमों का इन सिद्धांतो को समझना, जानना और फिर उनके अनुसार जीवन मार्ग का चुनाव करना हमारा कर्तव्य है। आध्यात्म वसुधैव कुटुंबकम् के नियमों का पालन करता है। आध्यात्म की दृष्टि में सम्पूर्ण जगत एक परिवार है। सभी बाह्य कष्टों से मुक्ति और सुखों की प्राप्ति हेतु आध्यात्म मानव चेतना को जागृत करता है। मानवतावादी संदेश को मनुष्य आध्यात्म के माध्यम से विश्वव्यापी बनाने का कार्य करता है। आध्यात्मिक संदेश प्रसारित करने हेतु दर्शन का प्रतिपादन किया गया है, जो मानवता के कल्याण और विकास हेतु विचार विमर्श का साधन उपलब्ध कराते हैं। भारतीय दर्शन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवीन अन्वेषण के उपाय बताए गए हैं। महर्षि सुश्रुत के द्वारा खोजी गई शल्य चिकित्सा जो भारतीय आध्यात्म दर्शन की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ हैं। भारतीय दर्शन ने भौतिक विज्ञान को प्रतिपादित किया है। महर्षि कणाद द्वारा सबसे पहले प्रमाणु तत्व के सूक्ष्म कण की व्याख्या प्रस्तुत किया गया था। जिससे भौतिक विज्ञान में एक क्रांति की लहर दौड़ पड़ी। बहुतों विज्ञान की अवधारणा जो मूलतः आध्यात्म की देन है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि 'आध्यात्म और विज्ञान दोनों दर्शन से निकलते है। विज्ञान की उपयोगिता पृथ्वी पर जीवन की बेहतरी के लिए प्रकृति की शक्तियों का उपयोग करने और ज्ञान के रास्ते ब्रह्मांड की वास्तविकता से परिचित होने में है।' स्वामी विवेकानंद विज्ञान को आध्यात्म का दूत कहा है। प्राचीन कला से भारतीय ज्ञान की संस्कृति का उच्च शिखर पर होना इस बात का संकेत है की आध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। आध्यात्म की आधारशिला और विज्ञान के अन्वेषण से आज भारत चाँद पर कदम रख दिया है। सापेक्षता के सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी विज्ञान को आध्यात्म का रूप माना है। आइंस्टीन लिखते हैं कि 'धर्म, कला विज्ञान वास्तव में एक ही वृक्ष की शाखा प्रशाखाएँ हैं।' विज्ञान और आध्यात्म का जन्म एक साथ हुआ है। इनका उद्देश्य भी एक है। विज्ञान बाह्य सच को खोजने का साधन है। आध्यात्म आंतरिक चेतना को जगाने का कार्य है।वैश्विक महामारी के समय में आध्यात्म और विज्ञान का सामंजस्य देखने को मिलता है एक तरफ विज्ञान अदृश्यशक्ति संक्रमण को नष्ट करने पर अन्वेषण कर रहा था तो वहीं दूसरी ओर आध्यात्म अंतरात्मा और मानवता को संक्रमण से लड़ने के लिए आत्मबल और साहस प्रदान कर रहा था। अंतः संक्रमण से भयभीत हुई दुनिया को मुक्ति मिली। विज्ञान मानवतावाद को बढ़ावा देता है। विज्ञान जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के नाम पर बाँटता नहीं है। आध्यात्म मानवता को एक सूत्र में पिरो कर एक साथ चलने का माध्यम प्रदान करता है। असल में दोनों का कार्य, उद्देश्य एक है। आज भारत की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, साहित्य जो देश दुनिया में अपनी कृतिमान स्थापित कर रही है वह विज्ञान का ही देन है। आज भारत विश्व गुरु बन गया है। यह भारतीय आध्यात्म की देन है। आज बहिर्जगत में विज्ञान ने दुनिया को एक सूत्र में आबद्ध करने का आधार प्रस्तुत किया है तो अंतर्जगत में वही प्रयोजन आध्यात्म पूरा कर रहा है। आध्यात्म यदि शरीर है तो विज्ञान उसमे प्रवाहित होता रक्त है। दोनों इतने अभिन्न हैं की इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

ऐसे आयोजन से समाज को नई दिशा मिलती है -महामंडलेश्वर शैलेषानंद गिरि महाराज

श्रीगौड मालवीय ब्राम्हण समाज, धार नि:शुल्क परिचय सम्मेलन समिति द्वारा अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम

धार। श्री श्रीगौड मालवीय ब्राम्हण समाज, धार नि:शुल्क परिचय सम्मेलन समिति द्वारा अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्रीगौड समाज के पंच दशनाम जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर शैलेषानंद गिरि महाराज थे। उन्होंने आयोजन की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज को नई दिशा मिलती है। ये अनूठा आयोजन है। अध्यक्षता सुधीर त्रिवेदी ने की। महिला अध्यक्ष किरण जोशी, युवा कार्यकारिणी अध्यक्ष निलेश पाठक, उपाध्यक्ष उज्जवल दुबे, अनिल जोशी , कैलाश मंडलोई, कोषाध्यक्ष विजय कानूनगो, महिला उपाध्यक्ष सोनल दुबे एवं वर्षा व्यास मौजूद रही। मंच पर अतिथि के रूप में शरद जोशी,संरक्षक गजानंद जोशी, सुभाष पाठक, प्रदीप जोशी, महिला संरक्षक कामिनी दुबे, कल्पना जोशी उपस्थित रही। संचालन उज्जवल दुबे ने किया। सुधीर त्रिवेदी ने बताया कि पूर्व में समिति द्वारा नि:शुल्क परिचय सम्मेलन कराया था। आगामी दिनों में फिर से नि:शुल्क परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

नृत्य के साथ लगाया ठाकुरजी को भोग- मथुरा से आई टीम ने आकर्षक नृत्य के ठाकुरजी को 56 भोज लगाए। टीम में राधा, कृष्ण और ग्वालों ने भजनों पर सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी। प्रथम कड़ी में सरस्वती वंदना बाद कोरोना में दिवंगत समाजजनों को श्रद्धांजलि दी। 80 पार कर चुके समाज के वरिष्ठों का सम्मान भी किया। सभी ने अन्नकूट में प्रसादी ग्रहण की।

अंडर -22 जिला क्रिकेट टीम चयन हेतु चयन ट्रायल 22 को

धार। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में जिले की अंडर -22 क्रिकेट टीम का चयन ट्रायल स्थानीय उदय रंजन क्लब मैदान पर दिनांक 22 नवंबर, बुधवार को दोपहर 3 बजे किया जावेगा जिले की समस्त तहसीलों के खिलाड़ी चयन ट्रायल में भाग ले सकते हैं कट ऑफ डेट 01/09/ 2001 होगी खिलाड़ियों को पंजीयन कराना आवश्यक होगा एवं स्वयं की कीट साथ में लाना होगी पिछले 3 वर्षों की ओरिजिनल अंकसूची ,आधार कार्ड एवं डिजिटल जन्म प्रमाण पत्र अनिवार्य होगा। 24 नवंबर को अंडर-22 का लेदर बॉल टूर्नामेंट खंडवा में प्रारंभ हो रहा है। जानकारी एसोसिएशन के सचिव राजेंद्र सिंह चौहान ने दी।

पार्थ शर्मा एवं अविका वर्मा 35वी सब जूनियर नेशनल

बैडमिंटन चैंपियनशिप बालनगीर (उड़ीसा) में म.प्र. दल का नेतृत्व करेंगे

धार। बालनगीर (उड़ीसा) में 21 से 24 नवंबर तक खेली जाने वाली '35वीं सब जूनियर नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप' में भाग लेने हेतु धार के उभरते हुए प्रतिभावान शटलर्स अविका वर्मा एवं पार्थ शर्मा अपने पालकगण के साथ बालनगीर के लिए प्रस्थान किया। जानकारी देते हुए शरदचंद्र निगम संस्था अध्यक्ष ने बताया कि इस वर्ष 'म.प्र. राज्य स्तरीय सब जूनियर बैडमिंटन स्पर्धाओ' में लगातार श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले शटलर्स अविका वर्मा एवं पार्थ शर्मा अंडर 13 बालक-बालिका एकल एवं युगल वर्ग में '35 वी सब जूनियर नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप बालनगीर' में पहली बार म.प्र दल का नेतृत्व करेंगे। स्पर्धा के एकल एवं युगल वर्ग के मुकाबले 21.11.23 से खेले जाएंगे। इस अवसर पर उनके प्रक्षिशक सुधीर वर्मा ने शटलरो की राष्ट्रीय उपलब्धि पर दोनों शटलरो को बधाई देते हुए स्पर्धा में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर पदक जीतने हेतु अग्रिम हार्दिक शुभकामना प्रेषित की।

भोजपुरी समाज के लोगों को दी छठ की शुभकामनाएं

सांसद डीडी उइके एवं विधायक डॉ. पंडागरे ने डूबते और उगते हुए सूर्य को दिया अर्घ्य

भोजपुरी एकता मंच द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए आयोजित

बैतूल/सारनी। आस्था एव विश्वास के दो दिवसीय महापर्व छठ पूजा का शुभारंभ सूर्य भगवान के प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ बैतूल सांसद डीडी उईके, विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चो प्रदेश मिडिया प्रभारी अबिजर हुसैन, नपा अध्यक्ष किशोर बरदे, सारनी एसड़ीओपी रोशन कुमार जैन, पी जे शर्मा, जगदीश पवार, महेन्द्र सिह ठाकुर, ओम प्रकाश सिह, पूर्व नेता प्रति पक्ष महेन्द्र भारती, भीमबहादुर थापा, श्रमिक नेता ऐ एन सिह, भरत सिंह, सुनील सरियाम सुधा चन्द्रा, कालीमाई व्यापारी संघ अध्यक्ष रमेश हरोड़े, भोजपुरी एकता मंच जिला अध्यक्ष रंजीत सिह, कमलेश सिह, भोला कान्ती, अरुण सिह सुरजदेव सिह ओम प्रकाश सिह ,नागेन्द्र निगम किशोर चौहान विक्की सिह की उपस्थिति में किया गया।

जिसमें सतना की गायिका ममता सत्यापित, सविता मिश्रा गायक जबलपुर, असित विश्वास, सुनील ने सिहं द्वारा भोजपुरी गीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा कार्यक्रम में झांकियां जबलपुर के कलाकार मनीष कोरी द्वारा अभिनय किया। इसे देखकर लोग काफी मनमोहित हुए एवं लोगों ने अभिनय की जा रही झांकी की प्रशंसा की।

इस अवसर पर सांसद डीडी उईके ने कहा कि हम सब सौभाग्यशाली है सतपुड़ा सुरमय वादियों में बसी विद्युत नगरी एवं सतपुड़ा का जलाशय का पावन यह छठ मैय्या का तट और प्रातः कालीन सूर्यदेव की किरणें जिससे हमारा रूप तेज और वर्चस्व बढ़ाने की नियमितता और जो हमारा यह लोकपर्व है जिसमें हम सब सम्मिलित हैं। भगवान के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। हम सभी इसके साक्षी बने रहे हैं यह लोक उत्सव हमारी संस्कृति एवं लोक गीतों का संरक्षण है। सभी भोजपुरी समाज के लोगों को छठ पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और भोजपुरी एकता मंच के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूं और सफल आयोजन सराहना करता हूं। जलप्रहरी मोहन नागर ने कहा कि भोजपुरी एकता मंच एवं भोजपुरी समाज के लोगों को छठ पावन पर्व की बधाई देता हूं इतना प्रसन्नता का यह त्यौहार है कि आज हमारी प्रसन्नता दुगनी चौगुनी है। प्रतिवर्ष हम यहां छठ पर्व का उत्सव मनाने आते थे लेकिन जब जल की ओर देखते थे तो लगता था कि गोलब का मैदान हैं। इतना बड़ा जलाशय से एक खरपतवार की आगोश में आ गया था। सारे प्रयास शासन प्रशासन और विद्युत मंडल और सबने मिलकर किया लेकिन एक जन आंदोलन के रूप में सारनी,पाथाखेड़ा एवं बगडोना के लोगों ने प्रारंभ किया। तीन वर्ष का संकल्प लिया कि हम इस जलाशय को पहले की तरह स्वच्छ करेगें। फिर सब में मिलकर खरपतवार को जलाशय से बाहर निकाला फिर हमारे सांसद ने लोकसभा में जाकर खरपतवार के मामले को उठाया। यहां के विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे ने विधानसभा में मामला उठाया। प्रदेश मुख्यमंत्री के निर्देश पर टीम का गठन हुआ। तत्कालीन जो मुख्य अभियंता रमेश गुप्ता के प्रयासों से वैज्ञानिकों का दल आया और चाइनीस झालर को खाने वाले कीड़े लाकर डेम में छोड़े गए तब जाकर कहीं इस जलाशय में आज हम छठ मैया के महापर्व की पूजा कर पा रहे हैं।

इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला डॉ. योगेश पण्ड्राग्रे नपा अध्यक्ष किशोर बरदे नपा उपाध्यक्ष ने भोजपुरी समाज के लोगों को छठ पूजा की बधाई दी एव आयोजन समिति को सफल आयोजन के लिए प्रशंसा की । वहीं भोजपुरी एकता मंच के जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह, कमलेश सिह, प्रमोद सिहं, लक्ष्मण साहू, विक्की सिह, छविनाथ भारव्दाज ने बताया कि आस्था के इस महापर्व को बिहार तथा यूपी के लोगो के द्वारा काफी हर्षोल्लास के मनाया गया है। सारनी क्षेत्र में लगभग सैकड़ों परिवारों के माध्यम से छठ त्यौहार मनाया जाता है। कहा जाता है कि यह पर्व बहुत कठिन होता है जिसमें निर्जल रहकर व्रती उपवास रखते हैं, 4 दिन के इस पर्व को काफी कड़े नियमों से करना पड़ता है। आस्था के महापर्व छठ पर्व का आयोजन सारनी क्षेत्र के सतपुड़ा डैम, पाथाखेड़ा के शिव मंदिर,नांदिया घाट, तेलिया डैम सहित कई स्थानों पर किया जाता। जिसमें छठ पर्व का उपवास रहने वाले व्रतियों ने भगवान सूर्य की आराधना में पानी में खड़े होकर कड़ी तपस्या की जिसके बाद भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया। आस्था के महापर्व छठ पर्व के उपवास करने वाले व्रती ने 36 घंटे का कड़ा उपवास उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने के बाद खत्म होता है। जिला प्रशासन एवं स्थानीय प्रशासन के अधिकारी, नपा प्रशासन,मृत्स्य विभाग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। जबकि कार्यक्रम उसको सफल बनाने के लिए नगर पालिका से अध्यक्ष किशोर बरदे, पुलिस प्रशासन थाना प्रभारी अरविंद कुमरे, गोताखोर की टीम से दिलीप झोड़, स्वास्थ्य विभाग, सफाई विभाग, साउंड सिस्टम जुल्फिकार डी जे साउण्ड, ठेकुआ प्रसाद बनाने के लिए लक्ष्मण साहू, धर्मेंद्र राय, शिव गुप्ता चाय व्यवस्था के लिये गोलू राजपूत को सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम का आयोजन पिछले बारह वर्षों से भोजपुरी एकता मंच व्दारा भव्य रुप में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें नगर पालिका सारनी, पुलिस प्रशासन, एमपीईबी सारनी, डब्लूसीएल पाथाखेड़ा, मत्स्य विभाग, राजस्व विभाग के सहयोग एवं खासतौर पर मीडिया की शानदार कवरेज के कारण सारनी सतपुड़ा डैम की छठ पूजा का आयोजन पुरे जिले ही नहीं अपितु पूरे प्रदेश में सारनी अपनी एक अलग ही पहचान बना चुका है।

सुरक्षा की रही पूर्ण व्यवस्था - पुलिस जवानों को सतपुड़ा डैम में स्थित छठ घाट पर तैनात थे। वही पुलिस के जवानों ने भी दोनो दिन सुरक्षा की दृष्टि से जगह जगह तैनात कर किसी भी अप्रिय घटना को घटित नहीं होने दिया। वही यातायात व्यवस्था ना बिगड़े और श्रद्धालुओं को किस तरह के परेशानी ना हो जिसको लेकर चिंतित पार्किंग पर दो और चार पहिया वाहनों को पार्किंग कराया गया। सारनी अनुविभागीय पुलिस अधिकारी रोशन कुमार जैन, थाना प्रभारी अरविंद कुमरे तथा पूरी पुलिस टीम ने अपना कार्य पूरी लगन के साथ किया थे। और कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम योगदान दिया।

छठ घाट पर स्वच्छता का रखा गया ध्यान - सतपुड़ा छठ घाट दम पर सफाई विभाग द्वारा स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए दो पालियां में कर्मचारी ड्यूटी तैनात की गई थी ताकि समय-समय पर सफाई की जा सके। किसी तरह की कोई गंदगी ना उत्पन्न हो। और श्रद्धालु किसी तरह की कोई परेशानी ना हो। जिसकी जिम्मेदारी खुद स्वास्थ्य निरीक्षक कमल किशोर भावसार ने संभाली थी।

गोताखोरों की भी रही तैनाती- कड़कड़ाती ठंड में शाम और सुबह दोनों टाइम नगर पालिका प्रशासन द्वारा गोताखोरों की व्यवस्था की गई थी। जो अपने चिन्हित स्थानों पर सक्रिय रहे। जिसके कारण पानी में ऐसी कोई भी अप्रिय घटना घटित नहीं हुई।

रंगारंग कार्यक्रम एवं ग्राउंड की सजावट ने मोहा सबका मन- सतपुड़ा डैम में स्थित आस्था के महापर्व छठ पर्व के अवसर आयोजित भोजपुरी संस्कृतिक कार्यक्रम देखने आए श्रद्धालु के लिये यादगार पल था। वही दूसरी ओर झाकियों के माध्यम से भी श्रद्धालू का मन मोहा नगर पालिका प्रशासन की ओर से पूरे ग्राउंड को इतना सुंदर शर्मा टेंट हाउस एवं यश टेंट हाउस ने सजाया था। श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा। यह भव्य आयोजन प्रतिवर्ष भोजपुरी एकता मंच व्दारा आयोजित किया जाता है।

इस अवसर पर भोजपुरी एकता मंच के जिला अध्यक्ष रंजीत सिह, कमलेश सिह, प्रमोद सिह, लक्ष्मण साहू, अरुण सिह, विक्की सिह, नन्हें सिह, छविनाथ भारद्वाज, बाबू झा, आई पी सिह, शिबू सिह, धमेन्द्र राय, मिन्टू राय, सुभाष चौरसिया, बाबू सिह विक्रम सिह भीम बहादूर थापा गणेश महस्की मो ताहिर बबलू बामनकर देवेन्द्र सोनी गोलू राजपूत सुधीर यादव, नारायण खातरकर, प्रवीण सोनी सरोज विश्वकर्मा, जॉन पाण्डे, अंकित सिह, शैलेष ठाकूर, दिलीप झोड, शिवबली सिह, मोती राम बंजारे, मुकेश यादव, पप्पु सिह, आर एन सिह सहित भारी सख्या मे श्रद्धालु उपस्थित थे।

मुलताई स्टेशन से गुजर रही मालगाड़ी की चपेट में आने से एक व्यक्ति की हुई मौत, नहीं हो पाई शिनाख्त

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर के रेलवे स्टेशन पर सोमवार दोपहर करीब 12 बजे प्लेटफार्म नम्बर 1 पर से मालगाड़ी गुजर रही थी, तभी उसकी चपेट में एक व्यक्ति आ गया। व्यक्ति के ट्रेन की चपेट में आने से वह बुरी तरह से घायल हो गया। इसका एक हाथ और दोनो पैर कट गए थे। ट्रेन को रुकवाया गया और उसे बाहर निकलवा कर तत्काल मौके पर एंबुलेंस बुलावाई गई, जिससे उसे नगर के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया। लेकिन उसने तब तक दम तोड़ दिया। प्रत्यक्षदर्शीयो द्वारा बताया गया कि रेलवे स्टेशन के मुख्य लाइन पर गुड शेड की लोडिंग गाड़ी खड़ी हुई थी, जिसके कारण प्लेटफार्म नंबर एक से मालगाड़ी गुजर रही थी। तभी अचानक से उस गाड़ी की चपेट में एक व्यक्ति आ गया और उसकी मौत हो गई। हालांकि खबर लिखे जाने तक उस व्यक्ति की शिनाख्त नहीं हो पाई थी। उसके पास से कोई भी दस्तावेज नहीं मिल पाए, मात्र एक मोबाइल फोन प्राप्त हुआ है जिससे जानकारी जुटाई जा रही थी। उसके शव को सरकारी अस्पताल के पोस्टमॉर्टम कक्ष में रखवा दिया गया था। इस बात की जानकारी भी नही लग पाई की वह व्यक्ति स्वयं से ट्रेन के बीच में कूदा या, गलती से गिर गया। यह दुर्घटना है या आत्महत्या इस बारे में पड़ताल की जा रही है। कुछ लोगो ने बताया की उसके साथ एक और व्यक्ति था और वे दोनो प्लेटफार्म नंबर एक पर काफी देर से घूम रहे थे।

स्कूली बच्चों को ले जा रहा आटो पलटा, दो बच्चे घायल

परमंडल के पास राजस्थान एग्रो के सामने हुआ हादसा

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर के समीप ग्राम परमंडल पर सोमवार दोपहर करीब ढाई बजे कोरोला स्कूल के बच्चों को लेकर हेटी खापा जा रहा ऑटो अचानक से अनियंत्रित होकर पलट गया। ऑटो में 6 स्कूली बच्चे और ऑटो चालक परमंडल निवासी कृष्णा डढोरे सवार था। जिसमे से दो बच्चे घायल बताए जा रहा है, प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा बताया गया कि मुलताई से हेटी खापा जा रहे ऑटो के सामने अचानक से कुत्ते आ गए, जिसके चलते ऑटो अनियंत्रित हो गया और वह राजस्थान एग्रो के सामने पलट गया। जिसके चलते ऑटो का सामने का कांच और ड्राइवर के पास का गेट टूट गया। ऑटो में सवार दो स्कूली बच्चे शानवी पवार और हिमांशी धुर्वे को इस दुर्घटना में चोट आई है। वहीं ऑटो में दिव्यांशी पवार, शिवाय पवार, अव्यान्श पवार और अयांश पवार भी सवार थे। ऑटो पलटने की सूचना मिलते ही मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई और मुलताई पुलिस थाने से पुलिस बल भी मौके पर पहुंच गया। मौके पर से गुजर रहे निजी वाहन चालकों द्वारा बच्चों को तत्काल सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया। जहां पर डॉक्टर द्वारा दोनों घायल बच्चों का उपचार किया गया। ऑटो प्लेट में की सूचना लगते ही कोरोला स्कूल के संचालक सुरेंद्र सिंह राठौड़ भी तत्काल अस्पताल पहुंचे और सभी बच्चों की स्थिति देखी और उन्हें तत्काल उपचार उपलब्ध करवाया।

गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी का नगर आगमन वैष्णव भक्तों की जड़ें और मजबूत कर गया..

नर्मदापुरम। अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ प्रमुख श्री भक्ति विकास स्वामी का दो दिवसीय घोषित कार्यक्रम आज सम्पन्न हो गया। एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हुए गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी भक्तों को आशीर्वाद देते हुए कृष्ण भावना भावित मिशन के प्रचार-प्रसार के लिए आज आगे गन्तव्य के लिए प्रस्थान कर गए, दक्षिण एक्सप्रेस से रवाना हुए गुरु महाराज को विदा करने रेल्वे स्टेशन पर भक्तों की खासी भीड़ रही जिन्होंने श्री हरि नाम संकीर्तन करते हुए गुरु महाराज को विदा किया, गुरु महाराज नगर में दो दिवसीय घोषित कार्यक्रम में भाग लेने आए थे, एक दिन पहले मालाखेड़ी स्थित स्वयंवरम गार्डन में मंदिर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गुरु महाराज शामिल हुए यहां कार्तिक मास में होने वाली भगवान दामोदर की प्रसन्नता के लिए किए जाते दीप-दान में भाग लिया इस दौरान दीप-दान से पूर्व दामोदर अष्टक का गायन हुआ, गुरु महाराज ने यहां कृष्ण भावना भावित मिशन को आगे और प्रचार प्रसार मिले, लोगों में

आध्यात्मिक रुचि बढ़े को दृष्टिगत रखते हुए प्रवचन दिए। वर्ल्ड कप फाइनल मैच होने के बाद भी गुरु महाराज को सुनने और उनके दर्शन करने के लिए उमड़ी भीड़ इसमें गवाह बनी कि, इस्कॉन मंदिर परिवार द्वारा चलाए जा रहे कृष्ण भावना भावित मिशन को लेकर लोगों के मन में आध्यात्म को जानने समझने की ललक तो है.. लेकिन भौतिक विषयों और रोजमर्रा के कार्यों में फंसकर वे इस मार्ग को अपना पाने से वंचित हैं। गुरु महाराज उनके प्रवचन में उपस्थित जनसमूह को देख काफी प्रभावित हुए। इस दौरान भक्तों ने आध्यात्मिक ज्ञान के लिए सबसे ज्यादा जरूरी गुरु महाराज और अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ (इस्कॉन) के संस्थापक पूज्य गुरुदेव प्रभुपाद द्वारा लिखित ग्रंथों को हाथों हाथ लिया जो नगरवासियों में कृष्ण भावना भावित मिशन को लेकर बड़े रहे रुझान का परिचायक दिखाई दिया। गुरु महाराज आज सुबह एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर की इकाई में सुबह पांच बजे मंगल आरती में शामिल हुए, जिसे इस्कॉन मंदिर परिवार ने कृष्ण धाम सा सुंदर सजाया था। गुरु महाराज की अगवानी के लिए मंगल कलश रखकर फूलों की रंगोली और रास्ते में दीप प्रज्वलित किए गए थे। मंदिर में भगवान कृष्ण की प्रसन्नता के लिए आज नर्मदा दास प्रभु ने मंगल आरती का गायन किया जिसमें गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी की उपस्थिति मंदिर परिवार के वैष्णव भक्तों के लिए संजीवनी बनी.. मंगल आरती के पश्चात भगवान नरसिंह देव आराधना और तुलसी आरती के साथ श्री हरि नाम संकीर्तन का आलौकिक आंनद यहां सदैव भक्तों को गुरु देव की उपस्थिति का आभास करता रहेगा इस आशा के साथ आज यहां भक्तों ने अपने आध्यात्मिक गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी को गंतव्य को अपने क्षेत्र में कृष्ण भावना भावित मिशन को गुरुदेव की मंशानुरूप और मजबूती से आम लोगों के मध्य कृष्ण भावना भावित संदेश जन जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ विदा किया। उल्लेखनीय है कि आज से ठीक चार साल पहले गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी जी इस्कॉन मंदिर परिवार में उपस्थित हुए थे उनके आशीर्वाद का परिणाम ही है आज नगर सहित आस-पास के क्षेत्रों में भी लोग बाखूब इस्कॉन मंदिर परिवार से जुड़कर हर रविवार को मंदिर कार्यक्रम में जुड़कर उसे उत्सवी बना चुके...

किस्सा ए क्रिकेट

मुकेश नेमा

लेखक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं।

फूफाजी हमारी टीम हार कैसे गई?

हमारा क़स्बा चूँकि देश में ही है इसलिये बाकी देश की तरह वह भी राजनीति, फ़िल्मों और क्रिकेट को ही ओढ़ता-बिछाता है। इन्हीं के बारे में सोचता है और यह मानता है कि इनके बारे में सोच लेना ही काफी है। लिहाज़ा गाँव के राम भरोसे टी स्टॉल पर ठलुओं की, बूढ़ों की और बेरोज़गार लड़कों की भीड़ है और बस क्रिकेट की चर्चाएँ हैं।

फूफाजी हमारी टीम हार कैसे गई ? वो भी फ़ाइनल मैच में, जबकि उसके पहले लगातार जीत ही रही थी वो। गुप्ता जी का लड़का सच में दुखी है!

बेटा इस हार का इतना रंज भी मत कर। दूसरे देशों की टीमें,बस हिंदुस्तान को जिताने के लिये तो नहीं खेलती है ना। उन्हें भी हक है कि कभी कभी वो भी जीत जायें।

पर हमारे खिलाड़ी अब तक तो अच्छा खेल रहे थे ना। कल क्या हो गया ?

तुमने किससे कहा कि क्रिकेट खिलाड़ी खेलते हैं?

मतलब!

बेटा ये अनोखा खेल है। इसे खेलने वाले नहीं खेलते। मैदान खेलता है। पिच खिलाती है इन्हें । ये तो कठपुतलियाँ हैं जैसा मैदान नचाता है इन्हें वैसे ही नाचना पड़ता है इन्हें।

तो खिलाड़ी क्या करते हैं ?

खिलाड़ियों के पल्ले खेलने से भी ज्यादा जरूरी काम होते है। उन्हें साबुन, तेल अंडरवियर ,बनियान ,दारू ,सिगरेट ,पान मसाला से लेकर टूथपेस्ट और दातून बेचने तक की ज़िम्मेदारी उठाना पड़ती है। इस देश में जो कुछ भी बिक रहा है इन परोपकारी लड़कों की वजह से ही बिक रहा है। हमारे बाज़ार और सटोरिये इन्हीं देवताओं के भक्त हैं और ये हमेशा अपने भक्तों के कष्ट दूर करने में व्यस्त बने रहते हैं। इन्हें अपना घर बसाने के लिये एक अदद एक्ट्रेस को तलाशना होता है ! ये अपने आप में बड़ा काम है।

आप तो कुछ भी बता रहे हैं फूफाजी। यदि ऐसा है तो पूरा देश पागल क्यों है इनके लिये ?

बेटा सवाल तो लाख टके का है तेरा। हम क्रिकेट और इसे खेलने वालों के पीछे पागल इसलिये हैं क्योंकि हम ऑलरेडी पागल हैं। हमें इस बात का सहूर ही नहीं है कि हमें क्या करना और सोचना चाहिये, हम क्रिकेट इसलिये देखते हैं क्योंकि हमारे पास बेशुमार फ़ालतू वक्त है। फ़ालतू वक्त इसलिए है क्योंकि हम फ़ालतू हैं। हम फ़ालतू इसलिए हैं क्योंकि हमें विचार पूर्वक फ़ालतू बनाए रखा गया है। और ऐसा करने वाले वो हैं जो मलाई खा रहे हैं और हमेशा खुद ही खाते रहना चाहते हैं।

फिर हम इनके हारने जीतने की चिंता करते क्यों हैं ?

यह इसलिए। क्योंकि हमे यह पता ही नहीं है कि चिंता करने के जरूरी मुद्दे दरअसल हैं क्या। हम ज़रूरी मुद्दों पर न सोचें इसलिए ही क्रिकेट है। दरअसल ये वो अफ़ीम है जिसे कामकाजी मजबूर माँ अपने रोते हुए बच्चे को चटा देती है। हम यह मानने को तैयार ही नहीं कि क्रिकेट मनोरंजन से अधिक कुछ नहीं। इसे विचारपूर्वक राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ दिया गया है। इसलिए जीतते ही हम गर्व से भर जाते हैं और इसमें होने वाली हार हमें दुख के समंदर में धकेल देती है। यदि हम आर्थिक दृष्टि से अधिक सफल, प्रज्ञापूर्ण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के होते तो इसे तटस्थ भाव से देखते और हार जीत के परे बस खेल का आनंद लेने में सक्षम होते। पर अफसोस ऐसा है नहीं। और यही हमारी नियति है।

बातें अब गरिष्ठ हो चली हैं। ऐसी बातें जो अपच की वजह बन सकती है। क़स्बे के कुछ लोग मानने भी लगे हैं कि फूफाजी अब सठिया चुके। और उन्हें अनसुना कर दिया जाना ही ठीक है। ठीक भी है ये। और जैसा कि पहले ही बताया था मैंने कि बाकी देश की तरह हमारे क़स्बे की पाचन शक्ति भी खराब है। इसलिये लोग क्रिकेट की ही बातें करना चाहते हैं और क्रिकेट को लेकर ही दुखी और सुखी होने में राजी हैं।

बुकाखेड़ी के पास बाइक स्लीप होने से बाइक सवार घायल

बैतूल/मुलताई। छिंदवाड़ा रोड पर बुकाखेड़ी डैम के पास सोमवार दोपहर करीब 1बजे डेम के पास बाइक अनियंत्रित होने से बाइक सवार बाइक सहित गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया । जिसके हाथ पैर एवं सिर में गंभीर चोट आई है। सूचना मिलने पर 108 एंबुलेंस से घायल को मुलताई अस्पताल लाया गया । जहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया। बताया जाता है कि ग्राम पिपरिया निवासी निलेश पिता बिनोदी पवार 27 वर्ष अपने गांव से मुलताई की ओर आ रहा था,इस दौरान ग्राम बुकाखेड़ी डैम के पास बाइक अनियंत्रित होने से वह रोड पर गिर गया।जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे 108 एंबुलेंस से नगर के सरकारी अस्पताल लाया गया। जहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया।

डहुआ में चल रही रामलीला, राम भरत मिलाप के साथ हुआ दशरथ मरण की लीला का मंचन

बैतूल/मुलताई। समीपस्थ ग्राम डहुआ में चल रही रामलीला के मंच पर रविवार की रात स्थानीय कलाकारों द्वारा राम भरत मिलाप एवं दशरथ मरण की हृदय स्पर्शी लीला का मंचन किया गया। रामलीला के मंच पर सर्वप्रथम केवट द्वारा भगवान राम,सीता एवं लक्ष्मण को अपनी नाव से गंगा पार कराने की लीला का मंचन किया गया। जिसके बाद भगवान राम एवं भरत के बीच मिलाप एवं दशरथ मरण की मार्मिक लीला का मंचन किया गया। लीला में सुधीर कड़वे ने भगवान राम,मयूर बारंगे ने सीता माता,राजू परिहार ने सुमंत,फुस्या पवार ने निषाद,अनिल बारंगे ने लक्ष्मण,घनश्याम मगरदे ने केवट,मनीराम बारंगे ने राजा दशरथ, नीलेश मगरदे ने केकई की भूमिका निभाई।

गौमाता से आती है समृद्धि : मोहन नागर

त्रिवेणी गौशाला में धूमधाम से मनाया गोपाष्टमी पर्व

बैतूल। गोसंवर्धन और गौसंरक्षण के क्षेत्र में विगत 25 वर्षों से समर्पित भाव से काम कर रही त्रिवेणी गौशाला झगडिया में सोमवार को गोपाष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। गोपाष्टमी पर्व पर सेंकडो लोगों ने त्रिवेणी गौशाला में गौमाता का पूजन और आरती की। त्रिवेणी गौशाला संचालन समिति ने गौशाला के संस्थापक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे राधेश्याम पांडे के चित्र पर माल्यार्पण कर उनके सेवाभाव को याद किया। गोपास्टमी पर्व पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारत भारती शिक्षा समिति के सचिव, प्रसिद्ध पर्यावरणविद, चिंतक, विचारक शिक्षाविद मोहन नागर ने कहा कि गौमाता से समृद्धि आती है। जहाँ गाय रहती है, वहाँ बीमारियाँ नहीं फैलती, मनुष्य की आयु लंबी होती है, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जंगल, खेती सब समृद्ध होते है। श्री नागर ने कहा कि समृद्धि के लिए गौ संरक्षण के साथ ही गौ आधारित खेती पर जोर देना चाहिए। कार्यक्रम को सांसद डी.डी. उइके ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर त्रिवेणी गौशाला के सचिव मनीषसिंह ठाकुर ने गौ शाला का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

गौशाला के प्रकल्पों का किया भ्रमण, गौ उत्पादों की खरीदी- त्रिवेणी गौशाला झगडिया में गोपाष्टमी पर्व पर सैकडो लोगों ने गौमाता का पूजन करने के साथ ही गौशाला के प्रकल्पों का भ्रमण किया और गौ उत्पादों की खरीदी भी की । गोपाष्टमी कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों ने त्रिवेणी गोशाला परिसर में स्थित गौवंश निवास, कंडा, लकड़ी निर्मित केन्द्र, चिकित्सालय, जैविक खाद, निर्माण यूनिट, किसान प्रशिक्षण केन्द्र सहित अन्य प्रकल्पों का भ्रमण किया। त्रिवेणी गौशाला परिसर में लगाई गई गौ उत्पादों की प्रदर्शनी से सैकड़ो लोगों ने हवन कंडा, धूपबत्ती, गौनाइल, गौमूत्र अर्क, नेत्राजन, जैविक खाद सहित अन्य गौ उत्पादों की खरीदी की। कार्यक्रम में भोजन प्रसादी का वितरण भी किया गया। गोपाष्टमी पर्व कार्यक्रम में सांसद डीडी उइके, पूर्व विधायक शिवप्रसाद राठौर, भारत भारती शिक्षा समिति सचिव मोहन नागर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, श्याम अग्रवाल, जगदीश अग्रवाल, चाटर्ड एकाउन्टेट प्रदीप खण्डेलवाल, धर्मेन्द्र माहेश्वरी, डॉ. एमएल राठौर, पिंटू राजसिंह परिहार, राजेश साहू, नारायण धोटे, रश्मि साहू, ग्राम पंचायत कढ़ाई की सरपंच पुष्पा झरबड़े, त्रिवेणी गौशाला झगडिया के संरक्षक नवीन तातेड़, अध्यक्ष राजेश मेहता, उपाध्यक्ष पंजाबराव मगरदे, सचिव मनीषसिंह ठाकुर, कोषाध्यक्ष रामराव वराठे, संचालकगण दीपक कपूर, विमल दुबे, विवेकसिंह भदौरिया, ऋषिराम सरले, रामभरोसे यादव, तनुज शाह प्रबंधक मनोज वर्मा सहित बड़ी संख्या में नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

आष्टा में एक घर में निकला जहरीला कोबरा सांप, मचा हड़कंप, घबराकर छत पर चढ़े परिजन

बैतूल/मुलताई । प्रभात पट्टन विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम आष्टा में रविवार देर रात शुभम माथनकर के घर के बाथरूम में जहरीला कोबरा सांप निकलने से हड़कंप मच गया, महिलाएं घबरा गई, बाथरूम में सांप को देखकर महिला सहित परिजन घबरा गए और कुछ परिजन तो छत पर चढ़ गए। सांप निकलने की सूचना तत्काल सर्प मित्र श्रीकांत विश्वकर्मा को दी गई जिसके बाद वे मौके पर पहुंचे और उन्होंने करीब 1 घंटे की कड़ी में मशक्कत के बाद सांप का सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया। उन्होंने बताया कि यह सांप कोबरा प्रजाति का सांप था, जिसमें न्यूरोटोक्सीन जहर पाया जाता है। अगर यह किसी को काट ले तो इंसान की मृत्यु हो जाती है। इसीलिए यदि सांप काटे तो ओझा गुनी झाड़ फूंक के चक्कर में ना पड़े, तत्काल नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचकर अपना इलाज करवाए।

121 फिट की चुनरी से होगा मां माचना का श्रृंगार

धूमधाम से मनाई जाएगी माचना जयंती

बैतूल। माचना जयंती धूमधाम से मनाने की रूपरेखा को लेकर मां माचना सेवा समिति की बैठक संपन्न हुई। समिति की सचिव सरिता दीपक राठौर ने बताया कि समिति और मातृ शक्ति की महिलाओं के संयुक्त तत्वावधान में जयंती विगत 14 वर्षों से निरंतर मनाई जाती रही है। उन्होने बताया कि जिले की जीवन दायनी मां माचना उत्सव 27 नवम्बर सोमवार को शाम 4 बजे दैय्यत बाबा घाट बडोरा पर धूमधाम से मनाई जाएगी। जिसमें 121 फिट की चुनरी से श्रृंगार किया जाएगा और दीपदान किया जाएगा। समिति अध्यक्ष बीआर खंडागरे ने सभी से कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

बदलते मौसम में बढ़ सकती है निमोनिया की संभावना

सीहोर(निप्र)। बदलते मौसम में बच्चों में निमोनिया के लक्षणों की पहचान एवं उसके उपचार एवं प्रबंधन के लिए स्वास्थ्य विभाग ने तैयारी की गई हे। निमोनिया के आकलन, निमोनिया का वर्गीकरण, खतरनाक लक्षणों के चिन्हों की पहचान, समुदाय आधारित निमोनिया का प्रबंधन, उपचार एवं रेफरल के संबंध में मैदानी कार्यकर्ताओं को जानकारी दी गई। स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि बदलते मौसम में बच्चों को निमोनिया के लक्षणों की पहचान एवं एसके उपचार एवं प्रबंधन के लिए विभाग तैयार है। जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की एएनएम को निमोनिया के संबंध जानकारी दी। स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि सर्दी के मौसम में बच्चों में निमोनिया के केसेस ज्यादा पाए जाते हैं। इसे देखते हुए मैदानी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को अवगत किया गया है। जिससे कि वह अपने क्षेत्र में निमोनिया के लक्षण वाले बच्चों की शीघ्र पहचान कर शीघ्र प्रबंधन कर सकें। निमोनिया से बचाव एवं जागरूकता के लिए विभाग द्वारा 29 फरवरी तक सांस अभियान संचालित किया जायेगा। निमोनिया फेफड़े का संक्रमण है। जिससे फेफड़ों में सूजन हो जाती है। निमोनिया होने पर बुखार खांसी और सांस लेने में कठिनाई जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। तेज सांस चलना या छाती का धंसना निमोनिया के दो मुख्य चिन्ह है। प्रशिक्षण में शिशु रोग विशेषज्ञों द्वारा द्वारा बच्चों में सांस की दर को गिनकर निमोनिया के लक्षणों की पहचान के संबंध में जानकारी दी गई। बच्चों में सांस की गति का ठीक ढंग से आकलन करके निमोनिया को प्रारंभिक अवस्था में ही पहचाना जा सकता है। इसके लिए बच्चों की श्वास को एक मिनट तक निरंतर देखा जाता है।

तकनीक

राजकुमार जैन

स्वतंत्र विचारक और लेखक

एआई की बढ़ती ताकत, चुनावी घोषणा पत्र में मिली जगह

कृत्रिम मेधा से देश दुनिया में तेजी से बदलाव आ रहे हैं जो समय की जरूरत भी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से हम तेजी से आगे बढ़ सकते हैं और सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। गवर्नेंस पर भी इसका व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रशिक्षण मॉडल इतने सशक्त हो गए हैं कि वो लोगों के मन की भावनाओं को भी समझने लगे हैं और भावनाओं को प्रभावित कर किसी एक पक्ष की ओर झुका भी सकते है। अमेरिकी चुनावों में इनकी प्रभावशाली उपस्थिति दुनिया देख चुकी है। एआई के सबसे खतरनाक उपयोग डीपफैक को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी चिंता जताई है।

हाल ही में हो रहे पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी एआई की सशक्त मौजूदगी का अहसास विभिन्न स्तरों पर हुआ है। राजनीतीक पार्टीयों ने एआई का उपयोग आकर्षक घोषणा पत्र, प्रभावी वीडियो, उपलब्धियां बताने वाले लेख और अन्य प्रचार सामग्री, अपने उम्मीदवार की छवि गढ़ने, विरोधी उम्मीदवार को बुरा साबित करने जैसे कामों के लिए किया गया। सामान्यतया उम्मीदवार अपने घोषणापत्र में विकास के वादे करते है, समस्याओं से मुक्ति दिलाने की बात करते हैं, लोक लुभावन वादे करते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए मध्य प्रदेश राज्य के इंदौर के एक विधायक प्रत्याशी रमेश मेंदोला ने तो एआई की ताकत और भविष्य की संभावनाओं का आकलन करते हुए एआई का प्रशिक्षण दिलवाने का वादा ही अपने घोषणापत्र में कर दिया है। अपने क्षेत्र के युवाओं को आकर्षित करने का उनका यह प्रयास अपने आप में अनूठा है। ऐसा करने वाले वो एकमात्र प्रत्याशी हैं।

लोगों के मन में एआई को लेकर एक डर है कि एआई उनकी नौकरिया लेकर उन्हे बेरोजगार बना देगा। लेकिन विषय विशेषज्ञों का कहना है कि एआई भविष्य की वो तकनीक है जो नए रोजगारों का सृजन करेगी। युवाओं की टोलियों के समक्ष मेंदोला कहते हैं कि हमें एआई से डरने की नहीं बल्कि उसका उपयोग करना सीखने की जरूरत है क्योंकि नौकरी में आपकी जगह एआई नहीं बल्कि उस क्षेत्र में एआई का उपयोग जानने वाला लेगा। बीते वर्षों में हमने देखा है कि टैली जैसे अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर के आने के बाद अकाउन्टेन्ट की नौकरीयों पर खतरा महसूस किया गया था। लेकिन आज की हकीकत यह है कि सॉफ्टवेयर के चलन में आने के बाद कई ऐसे व्यवसायी भी अकाउंट रखने लगे हैं जो जटिलता के चलते पहले इससे कतराते थे। इस कारण हजारों नए रोजगारों का सृजन हुआ है और टैली जानने वालों के लिए रोजगार की कमी नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखकर लोगों को अपने अपने क्षेत्र में एआई के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण लेना चाहिए। एआई के प्रशिक्षण को लेकर उनकी इस अनूठी पहल से युवा वर्ग बेहद उत्साहित और प्रभावित है।

आगामी चुनावों में हम देखेंगे कि जिस उम्मीदवार की पहुंच में जितने अधिक प्रभावी एआई टूल्स होंगे उसके विजयी होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। मिसाल के तौर चुनावी खर्च पूरा करने के लिए पार्टी के उम्मीदवार अपने अभियान के लिए पार्टी समर्थकों से चंदा जुटाते हैं। प्रमुख पार्टीयों के प्रत्याशीयों के हजारों ऐसे समर्थक होते हैं जो चंदा दे सकते हैं लेकिन सभी उम्मीदवार की जानकारी में नहीं होते। इनका पता पता लगाने के लिए उम्मीदवार एआई की मदद ले सकते हैं। एआई की सहायता से कम से कम समय में संभावित चंदा देने वालों की लिस्ट बनाई जा सकती है। एआई सॉफ्टवेयर तमाम समर्थकों की प्रोफाइल और उससे जुड़ी जानकारी को प्रोसेस कर के चन्दा दे सकने वालों की एक संभावित लिस्ट बना देता है। इससे एक तरफ उम्मीदवार के लिए चुनाव लड़ने का ख़र्च कम होता है, तो दूसरी तरफ उसे जिन लोगों की लिस्ट मिलती है वो उसके लिए की तरह से उपयोगी और फ़ायदेमंद होती है।

आज का प्रत्याशी एआई का इस्तेमाल करके मतदाता से सीधे संवाद कर रहा है और हजारों मतदाताओं तक व्यक्तिगत पहुंच भी बना रहा है। सोशल मीडिया प्रबंधन टीम अपने उमीदवार और अपनी पार्टी के संदेश के साथ ही विपक्ष की कमियों को हर नागरिक के मोबाइल फोन तक पहुंचाने की रणनीति पर काम कर रही है। बगैर एआई के यह बहुत समय खाऊ और अत्यधिक खर्चीला काम होता था। इसे बनाने वाला जनरेटिव एआई 'चैट-जीपीटी' पिछले साल नवंबर में लॉन्च किया गया था जो अब आम लोगों के लिए उपलब्ध है। मतदाताओं की भावनाओं को अपने पक्ष में मोड़ने के लिए वीडियो, फ़ोटो और लेख जैसी प्रचार सामग्री आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस यानी 'एआई' से बनाए जाती है, जो लाखों मतदाताओं तक पहुंचाई जाती है, वो भी तेज़ गति से। इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए यह सामग्री मतदाताओं के छोटे समूहों को उनकी प्रोफ़ाइल और प्राथमिकताओं के हिसाब से तैयार कर के भेजी जाती है।

लोग घर पर हों, ऑफ़िस में या कहीं और, लेकिन उनके फ़ोन हमेशा ऑन रहते हैं। इसलिए डिजिटल माध्यम लोगों से संपर्क कर मैसेज, ईमेल, फ़ेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि के ज़रिये चुनावी संदेश पहुंचाने का एक अच्छा औजार है। मगर प्रचार के इस तरीके में कहीं ना कहीं लोगों से सीधे संपर्क की कमी रह जाती है। यह बहस का मुद्दा है कि यह तरीका सीधे संपर्क से ज़्यादा प्रभावी है या नहीं लेकिन यह सच है कि इसके माध्यम से हम एक समय में कहीं ज़्यादा लोगों से जुड़ सकते हैं।

एक तरफ जहां आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस में चुनावी प्रक्रिया में अधिक समानता लाने और उसे लोकतांत्रिक बनाने की क्षमता है तो दूसरी तरफ यह तकनीक चुनाव प्रचार में फ़र्जी सामग्री के इस्तेमाल से मतदाता को गुमराह कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को भी क्षति पहुंचाने में भी सक्षम है। ऐसे में यह सावधानी बरतना उचित होगा कि जो सामग्री परोसी गई है उसे पहली बार में ही सच ना मान लिया जाए। वस्तुतः कोई भी निर्णय लेने से पहले मतदाताओं को स्वयं जागरूक होकर फैक्ट चैक वेबसाईट जैसे माध्यमो से यह पता लगाना होगा कि उनके पास जो प्रचार सामग्री आई है वो असली है या नकली।

इन संभावित खतरों के बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समाज में एआई की बढ़ती स्वीकार्यता और इसकी व्यापक पहुँच के चलते विश्व भर में इसका उपयोग बहुतायत से होने लगा है और चुनाव जीतने की संभावनाओं को अपने पक्ष में करने के लिए एआई का उपयोग अब अनिवार्य होता जा रहा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वह दिन दूर नहीं जब यह तकनीक इतनी आगे बढ़ जाएगी कि इसके इस्तेमाल के बिना चुनाव अभियान चलाना मुश्किल हो जाएगा। यहाँ तक कि एआई अकेले ही जीत की गारंटी बन जाएगा।

राइट क्लिक

क्रिकेट में हार : मीडिया को भी गहरे आत्म मंथन की जरूरत है

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

आईसीसी वन डे विश्व कप टूर्नामेंट में छठी बार चैम्पियन बनी ऑस्ट्रेलिया से फाइनल में बीस साल पुरानी हार का बदला लेना तो दूर भारतीय टीम रोहित अपना वो स्वाभाविक खेल भी नहीं दिखा पाई, जिसके लिए सेमीफाइनल तक अपनी अजेयता के लिए वह जानी जा रही थी। लेकिन फाइनल में जो मुकाबला टूर्नामेंट की तब तक नंबर वन और नंबर टू में रही टीमों में होने जा रहा था, वह नतीजे आने तक रिवर्स में बदल गया। भारतीय टीम की खेल में हार के कारणों का विश्लेषण शुरू हो गया है आगे भी होता रहेगा। लेकिन इस समूचे विश्व कप टूर्नामेंट में और खासकर फाइनल के पहले भारत की जीत को लेकर मीडिया और खासकर इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया में जिस तरह का भयंकर हाइप और उन्माद भड़काने कोशिश की गई, उससे उनकी टीआरपी और हिट्स भले बढ़े हों, भारतीय क्रिकेट टीम पर इतना नकारात्मक दबाव बन गया कि वो फाइनल में ठीक से खेल ही नहीं सकी। यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि फाइनल मैच में भारत की हार मात्र दो- चार रन अथवा एक- दो विकेट से नहीं, पूरे छह विकेट से हुई। पूरे मैच के दौरान कहीं महसूस नहीं हुआ कि भारतीय टीम ने विश्व कप ट्रॉफी कब्जाने के लिए जी जान लगा दी हो। पूरा मैच लगभग इकतरफा ही लगा। टॉस हारने के बाद मैच जीतने को लेकर भारत की वैकल्पिक रणनीति क्या थी, वह भी नजर नहीं आई। ऐसा महसूस हो रहा था मानो टूर्नामेंट के अंतिम निर्णायक मैच में बल्लेबाज गेंदबाजों के और गेंदबाज, बल्लेबाजों के भरोसे बैठे थे तथा फील्डिंग के मामले में खिलाड़ियों को उनकी मर्जी पर छोड़ दिया गया था।

बेशक लगभग हाथ आई विश्व कप ट्रॉफी के यूं अचानक छिन जाने का गम भारतीय क्रिकेट टीम और क्रिकेट प्रेमियों को बरसों सालता रहेगा। इस हार के बाद टीम रोहित के सदस्यों की आंखों से आंसू छलक पड़े तो यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि इस अकेले मैच ने अब टीम के अब तक के किए कराए पर पानी फेर दिया था। लेकिन असली सवाल तो यह है कि क्या इस क्रिकेट वन डे वर्ल्ड कप में भारत की जीत को लेकर देश भर में चार दिनों से जो मीडिया हाइप बनाया जा रहा था, वह कितना वास्तविक और जायज था? यह सही है कि बाजारवाद के जमाने में आज हर इंवेट का बाजार पक्ष पहले देखा जाता है, लेकिन इससे इंवेट से जुड़े मूल कारकों पर कितना नकारात्मक असर होता है, इस बारे में शायद ही कोई सोचता है। इसमें मीडिया भी शामिल है। बेशक भारतीय क्रिकेट टीम ने फाइनल में कुछ रणनीतिक गलतियां कीं, इसीलिए हारे, लेकिन टीम नेतृत्व के सही निर्णय और खिलाड़ियों के अपने स्वाभाविक खेल से भटकने के पीछे वजह हर हाल में जीत हासिल करने का वह कृत्रिम दबाव भी है, जिसकी कतई जरूरत नहीं थी। जीत के नगाड़े सचमुच जीत हासिल करने के बाद भी बजाए जा सकते थे।

पता नहीं सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका पर धमाकेदार जीत के बाद भारतीय वन डे क्रिकेट टीम के सदस्यों ने टीवी चैनलों को कितनी बार देखा होगा, सोशल मीडिया पर कितनी बार क्लिक किया होगा, किया भी होगा या नहीं, लेकिन परोक्ष रूप से भी लगभग सभी चैनल, सोशल मीडिया पोर्टल व अखबार भी टीम रोहित जो जिताने के लिए जिस तरह पिल पड़ी थे, उसका खिलाड़ियों के मानस पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष असर होना लाजमी था। इस दौरान क्या- क्या नहीं हुआ? खिलाड़ियों के घर परिवार वालों को खंगाला गया, पूजा, हवन, दुआएं करवाई गईं। नरेन्द्र मोदी स्टेडियम के गेट से लेकर जहां खिलाड़ी ठहरे थे, उस होटल से निकलने वाली गाड़ियों के लाइव कवरेज से लेकर नीली जर्सी पहने हर शख्स को भारतीय टीम के हरकारे के रूप में पेश करने की कोशिशें हुईं। पूरे कवरेज में टीवी एंकरों की अदा यूं थी कि मानो विश्व कप की ट्रॉफी का पार्सल भारतीय कप्तान के नाम आ चुका है, बस ऑनलाइन पेमेंट की जरूरत है। पुराने दिग्गज खिलाड़ियों से बार-बार एक ही सवाल किया जा रहा था कि कौन जीतेगा, जिनका उत्तर भी लगभग प्रायोजित था।

एक बड़े न्यूज चैनल ने भारतीय टीम की जीत का श्रेय प्रधानमंत्री को देने तक की तैयारी कर ली थी तो कुछ ने क्रिकेट वर्ल्ड कप की जीत को भारत के विश्व गुरू बनने और इस जीत के राजनीतिक समीकरणों को बताने का खाका भी तैयार कर लिया था, दुर्भाग्य से वैसी नौबत ही नहीं आई। कुछ अखबारों ने इस क्रिकेट मैच को 'धर्मयुद्ध' और 'विश्व विजय' की संज्ञा तक दे डाली (बावजूद इस सच्चाई के कि दुनिया में क्रिकेट सिर्फ 1 दर्जन देश खेलते हैं और फुटबाल 195 देशों में खेला जाता है, जिसमें विश्व स्तर पर हम कहीं नहीं हैं)। मीडिया के लगभग हर फार्मेट में ऑस्ट्रेलिया से बदला लेने के लिए भारतीय टीम को उसी तरह उकसाया जा रहा था, जैसे कि आतंकी हमले का बदला पाकिस्तान को सबक सिखाने के रूप में लेने की बात की जाती है। टीवी चैनलों की हर संभव कोशिश यही थी कि दर्शक की उंगली रिमोट के उसी बटन पर रहे, जो उस चैनल का नंबर है। सोशल मीडिया इस मामले में सबसे आगे था। कुछ अति उत्साही यूजरों ने यह सिद्ध करने की भी कोशिश की कि वर्ल्ड कप में भारतीय क्रिकेट टीम की जीत का दिल्ली में सत्तासीन राजनीतिक दल का कैसे सीधा सम्बन्ध है। इसमें वो साल गिनाए गए, जब भारत आईसीसी टूर्नामेंट जीता और उस वक्त दिल्ली में किस पार्टी की सरकार थी। गोया राजनीतिक विचारधारा और सत्तासीनता का क्रिकेट में भारत के परफार्मेंस से कोई सीधा रिश्ता हो।

दरअसल इस तरह का उन्माद पैदा करना और जमीनी हकीकत तो दरकिनार करना झूठ के स्वर्ग में जीने की कोशिश करना भी एक तरह सामूहिक मानसिक रोग है। इसकी एक झलक फाइनल मैच में भी उस वक्त दिखाई दी जब विराट कोहली दर्शकों को और जोर से हल्ला मचाने के लिए उकसाते दिखे। विराट जैसे महान खिलाड़ी को इस बात पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए था कि हमारे खिलाड़ी अपना स्वाभाविक खेल कैसे खेलें और ऑस्ट्रेलिया के जाल से बाहर कैसे निकलें न कि दर्शकों को ज्यादा हल्ला करने के लिए उकसाना। इसी से साबित हो गया था कि हमारे खिलाड़ियों का ध्यान खेल से ज्यादा कहीं और है तथा उन्हें जीत के खुद के खेल से ज्यादा भरोसा दूसरे कारकों पर है।

मनोविश्लेषकों का कहना है कि भारतीय क्रिकेट टीम एक बार फिर 'फीयर ऑफ फेल्योर' (हार के डर) का शिकार हुई। ऐसी मनस्थिति में इंसान का सही रास्ते पर चलते हुए भी अपने आप पर विश्वास डगमगाने लगता है। हमारे बल्लेबाजों ने जिस लापरवाह ढंग से अपने विकेट गंवाए, फील्डरों ने बहुत सुविधाजनक फील्डिंग की, हालांकि गेंदबाजों की गेंदबाजी में कसर नहीं थी, लेकिन विकेट को पढ़ने में जो गलती शुरू में नेतृत्व से हो गई थी, उसका कोई तोड़ बॉलरों के पास नहीं था। साफ झलक रहा था कि लगभग पूरी टीम एक अदृश्य दबाव में खेल रही है, खिलाड़ी गलती पर गलती किए जा रहे हैं और अपने विश्वविजेता होने के काल्पनिक मायाजाल में भटक रहे हैं। कहा यह भी जा रहा है कि फाइनल के दिन किस्मत भारत का साथ छोड़ चुकी थी, लेकिन इतना तो हो ही सकता था कि जीत को लेकर जो गैर जरूरी और किसी हद तक घातक 'हाइप' तो रोका ही जा सकता था। क्रिकेट टीम की इस मार्मिक हार से मीडिया को इतना आत्म मंथन तो करना ही चाहिए कि वह अपनी भूमिका को खेल को खेल भावना से ही खेलने देने तक ही तक ही सीमित रखे, उसे युद्धोन्माद में तब्दील करने में ईंधन का काम न करें।

मंत्रालय में काम शुरू होने की उम्मीद

मतदान के बाद वल्लभ भवन में बढ़ी अफसरों की हलचल, कई दफ्तरों में अब भी सन्नाटा

भोपाल (नप्र)। मतदान के बाद सोमवार को मंत्रालय और डायरेक्ट्रेट के दफ्तरों में अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति बढ़ी है। जिस तरह की अपेक्षा की थी उसके बजाय अधिकारी दफ्तरों में कम ही पहुंचे हैं लेकिन पिछले एक माह से जो सन्नाटे का माहौल सभी दफ्तरों में बन रहा था उसकी अपेक्षा सोमवार को अधिक कर्मचारी पहुंचे। अधिकारियों का कहना है कि अब धीरे-धीरे फाइलों के मूवमेंट बढ़ने शुरू हो जाएंगे। कई विभागों के प्रमुख सचिव और सचिव स्तर के अधिकारी आज मंत्रालय पहुंचे।

प्रदेश में 9 अक्टूबर के बाद चुनाव आचार संहिता लगने पर प्रमुख सचिव, सचिव और विभागाध्यक्ष कैडर के अफसरों ने फाइलों का मूवमेंट रोक दिया था। अब जबकि मतदान हो गया है और वोटिंग के बाद पहले दिन दफ्तर खुले हैं तो पूर्व की अपेक्षा राजस्व, पंचायत और ग्रामीण विकास, वाणिज्यक कर, गृह, वित्त समेत अन्य विभागों में कर्मचारियों और अधिकारियों की उपस्थिति आज अधिक रही। हालांकि, कई अधिकारी सोमवार को भी दफ्तर नहीं पहुंचे। यही स्थिति विंध्याचल-सतपुड़ा भवन में लगने वाले दफ्तरों में भी देखने को मिली है।

चुनाव परिणामों पर अधिक कयासबाजी- मंत्रालय और विभागाध्यक्ष कार्यालयों में पहुंचे अधिकारी कर्मचारी सोमवार को अलग-अलग बैठकों में मतदान के बाद चुनाव परिणामों पर चर्चा में ही मशगुल रहे। मतदान के मत प्रतिशत की जानकारी के आधार पर कयास लगाए जाते रहे कि किस पार्टी की सरकार बन सकती है। इन चर्चाओं में लाड़ली बहना योजना, ओल्ड पेंशन समेत अन्य मुद्दों पर रिजल्ट के कयास लगाए जाते रहे।

शुरू होंगे प्रशिक्षण और अन्य बैठकें- उधर पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग ने प्रशिक्षण संस्थानों की समीक्षा बैठक मंगलवार को बुलाई है। एमपी नगर में होने वाली इस बैठक में संचालक पंचायत राज के अलावा अन्य अधिकारियों की मौजूदगी रहेगी। इसके अलावा रूटीन के कामों को लेकर भी बैठकों का निर्धारण कई विभागों में शुरू हुआ है ताकि आने वाले एक हफ्ते में आवश्यक बैठकें करके कामकाज तेज किए जा सकें।

जनसुनवाई को लेकर कवायद- जिलों में बंद हुई जनसुनवाई को लेकर भी कवायद शुरू हो गई है। इसके लिए आयोग से सहमति लेकर जीएडी जल्द ही जनसुनवाई शुरू करने का आदेश जारी कर सकता है। वरिष्ठ अफसरों का भी मानना है कि जनसुनवाई बंद होने से शहरी और ग्रामीण इलाकों के नागरिकों की समस्याओं पर कार्रवाई नहीं हो पा रही है। पेंशन और मूलभूत सेवाओं से संबंधित नागरिक सेवाओं पर भी काम शुरू हो जाएगा। इसके साथ ही समाधान केंद्रों से मिलने वाली सेवाओं को लेकर भी कसावट की स्थिति बन सकती है।

भोपाल में नौवीं कक्षा के छात्र ने की खुदकुशी

शादी से लौटे भाई ने सबसे पहले फंदे पर लटका देखा शव

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के टीला जमालपुरा स्थित पुराना आरटीओ इलाके में रहने वाले नौवीं कक्षा के एक छात्र ने रविवार की रात घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। सुसाइड नोट नहीं मिलने से मौत के सही कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। उसके परिजन एक शादी समारोह में शामिल होने गए थे। इस दौरान वह घर में अकेला था तब उसने यह कदम उठाया है। परिजनों के लौटने पर आत्महत्या का खुलासा हुआ। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

सरकारी स्कूल में पढ़ता था

एएसआई अमर सिंह ने बताया कि मोहम्मद जकी (15) पुत्र मोहम्मद जाहिद निवासी पुराना आरटीओ ऑफिस के करीब मकान नंबर 6 पुतली घर नौवीं कक्षा का छात्र था। उसके दो बड़े भाई जैद और कैफ हैं। पिता ई रिक्शा चालक हैं। घर के करीब ही स्थित एक सरकारी स्कूल में जकी पढ़ाई करता था। रविवार को उसके परिजन एक परिचित की शादी में गए हुए थे। वहां से सबसे पहले बड़ा भाई जैद लौटा। उसने घर का गेट लॉक देखा। काफी आवाजें देने पर भी गेट नहीं खुला तो अन्य परिजनों को सूचना दी।

पड़ोसियों की मदद से गेट तोड़कर प्रवेश किया- इसी बीच पड़ोसियों की मदद से गेट तोड़कर शव को पंखे से उतारा। पहले एक प्राइवेट हॉस्पिटल ले गए, इसके बाद हमीदिया पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। अस्पताल की सूचना पुलिस ने मर्ग कायम किया है। परिजनों ने बयानों में खुदकुशी का कोई ठोस कारण नहीं बताया है। घटना स्थल की तलाशी में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। एफएसएल की टीम ने भी स्पॉट का मुआयना सोमवार की दोपहर को कर लिया है।

शादी में जाने से इनकार कर दिया था- मृतक के भाई जैद ने बताया कि जकी ने शादी में जाने से मना कर दिया था। वह माता-पिता के कहने पर भी राजी नहीं हुआ। मैं लौटा तो उसके शव को फंदे पर लटका देखा। उसने कभी किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया। स्कूल में भी किसी परेशानी का जिक्र उसने कभी नहीं किया। हम उसे मोबाइल फोन भी नहीं देते थे।

भोपाल में युवक को सिर पर मारी तलवार

साथियों ने डंडे-हथौड़ी से बेसुध होने तक पीटा, 18 घंटे बाद मामला दर्ज

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक बदमाश ने युवक के सिर पर तलवार से हमला कर दिया। उसके साथियों ने भी उसे हथौड़ी और डंडे से बेसुध होने तक पीटा। शनिवार रात युवक दुकान पर सामान खरीदने गया था। वहां उससे मोहल्ले के ही एक बदमाश ने बीड़ी मांगी। मना करने पर वह बदसलूकी करने लगा। बहस कुछ ही देर में मारपीट तक जा पहुंची। इस बीच आरोपी अपने घर से तलवार ले आया। युवक सिर में मार दी। लहूलुहान होने के बावजूद उसके 2 साथियों ने भी डंडे और हथौड़ी से बेसुध होने तक मारपीट की। फिर तीनों उसे वहीं छोड़कर फरार हो गए। घटना के बाद परिजन युवक को लेकर छोला मंदिर थाने पहुंचे। जहां से उन्हें एक मेडिकल फॉर्म देकर अस्पताल भेज दिया। मामले में पुलिस ने 18 घंटे बाद रविवार शाम को एफआईआर दर्ज की है।

3 ने मिलकर तलवार, हथौड़ी-डंडे से पीटा

घायल के भाई धर्मेंद्र शर्मा ने बताया कि हम प्रेम नगर कॉलोनी की गली नंबर एक में रहते हैं। मेरा छोटा भाई नरेश (36) डीटीएच फिटिंग का काम करता है। वह शनिवार रात करीब 11:30 बजे घर से निकला था। उसने पास में ही स्थित एक किराना दुकान से बीड़ी का बंडल खरीदा। वहां पहले से ही कॉलोनी में रहने वाला नितेश खड़ा था। उसने एक बीड़ी मांगी। मेरे भाई ने मना कर दिया। इस पर नितेश अपशब्द कहने लगा। विरोध किया तो उसने झूमाझटकी शुरू कर दी। इसी बीच आरोपी दौड़कर अपने घर गया, और तलवार ले आया। कुछ ही मिनट में उसके दोनों भाई भी आ धमके। नितेश ने नरेश के सिर में तलवार मार दी। वह गिर पड़ा तो उसके भाईयों ने हथौड़ी-डंडे बरसाना शुरू कर दिया। वे बेसुध होने पर उसे पीटते रहे, और लहूलुहान छोड़कर फरार हो गए। मोहल्ले वालों की सूचना पर हम वहां पहुंचे तो देखा मेरा भाई जमीन पर पड़ा है। हम उसे छोला मंदिर थाने ले गए। वहां पुलिस वालों से कहा- भाई के सिर, हाथ-पैर में गंभीर चोटें हैं। उसे अस्पताल लेकर चलिए। इस पर पुलिस वालों ने कहा थाने में इस समय केवल 2 लोग हैं। यह मेडिकल फॉर्म ले जाओ, और अस्पताल में भर्ती हो जाना। हमारे पास उस समय वाहन नहीं था। जैसे-तैसे ऑटो से हमीदिया अस्पताल पहुंचे। वहां बिना पुलिसकर्मी के मेडिकल करने से इनकार कर दिया गया। कई घंटे परेशान होने के बाद बमुश्किल उसे भर्ती किया किया। अब उसका इलाज चल रहा है।

मामला दर्ज कर लिया गया- थाना प्रभारी- भोपाल के छोला मंदिर थाना प्रभारी सुरेश चंद्र नागर ने बताया कि रविवार को शाम 7 बजे घायल नरेश शर्मा के बयान दर्ज लिए हैं। मामला दर्ज किया जा चुका है।

बुधनी के अस्पताल में महिला की मौत, परिजनों ने किया हंगामा

बुधनी (नप्र)। सीहोर जिले के बुधनी अस्पताल में सोमवार को इलाज करवाने आई एक महिला की मौत हो गई। उसके परिजन ने नर्स पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा कर दिया।

जानकारी के अनुसार बुधनी थाने में पदस्थ सैनिक राममोहन की पत्नी ममता सराठे को दर्द होने पर अस्पताल ले जाया गया था, जहां नर्स ने इंजेक्शन लगाया। इसके बाद ममता की मौत हो गई है। इस मामले में बुधनी एसडीओपी शशांक गुर्जर का कहना है कि दूसरी जगह के डॉक्टर को बुलाकर पोस्टमॉर्टम कराया जाएगा। पीएम रिपोर्ट आने के बाद नियम अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

चुनाव नतीजे से पहले टीएस सिंहदेव ने गरमाया माहौल

छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने अपने बयान से एक बार फिर राज्य के राजनीतिक माहौल को गरमा दिया है। कहा जा रहा है कि सिंहदेव ने भारत बनाम न्यूजीलैंड क्रिकेट सेमीफाइनल मैच के घटनाक्रम का उदहारण देकर अपने दिल की बात जुबान पर ला दी। माना जा रहा है कि 2018 में कांग्रेस की सत्ता लाने में खूब मेहनत के बाद भी मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए टकटकी लगाकर पांच साल बिताने वाले सिंहदेव साहब इस बार कोई चूक नहीं करना चाहते हैं। इस कारण कहीं पे निगाहें और कहीं पे निशाना की तर्ज पर विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के पहले ही तीर चलाने लग गए हैं। कांग्रेस ने 2023 के लिए किसी को चेहरा घोषित नहीं किया, पर चुनाव मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में लड़ा गया। ऐसे में भूपेश बघेल को राज्य में कांग्रेस का स्वाभाविक नेता माना जा रहा है, लेकिन सिंहदेव के बयान से लग रहा है कि भूपेश बघेल के लिए राह आसान नहीं रहने वाला है। सिंहदेव के रुख से कांग्रेस में कुर्सी के लिए घमासान के संकेत मिलने लगे हैं। भूपेश बघेल और सिंहदेव के अलावा मुख्यमंत्री की कुर्सी की दौड़ में डॉ. चरणदास महंत और प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज का नाम भी सामने आ रहा है।

भाजपा में मुख्यमंत्री पद के दावेदारों की कतार

छत्तीसगढ़ में बहुमत किसे मिलेगा, यह तो तीन दिसंबर को ही स्पष्ट होगा, पर कांग्रेस की तरह भाजपा में भी मुख्यमंत्री पद की चाहत रखने वालों की चर्चा होने लगी है। भाजपा ने विधानसभा चुनाव मोदी के नाम पर लड़ा और मोदी की गारंटी जारी की। अब भाजपा में भी मुख्यमंत्री पद के दावेदारों को लेकर कयास लगने लगे हैं। 15 साल के मुख्यमंत्री और पार्टी के कद्दावर नेता के तौर पर डॉ. रमन सिंह का नाम मुख्यमंत्री के लिए चर्चा में है। इसके अलावा प्रदेश अध्यक्ष के नाते अरुण साव को भी दौड़ में माना जा रहा है। आदिवासी चेहरे के तौर पर मुख्यमंत्री के लिए रामविचार नेताम और विष्णुदेव साय भी केंद्र में हैं। युवा चेहरे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के चहेते के तौर पर ओ पी चौधरी का नाम भी लोगों की जुबान पर है। कुछ लोग विजय बघेल को भी मुख्यमंत्री की दौड़ में शामिल कर रहे हैं। विजय बघेल भाजपा की घोषणा पत्र समिति के प्रमुख होने के साथ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के खिलाफ विधानसभा चुनाव मैदान में हैं।

महिलाएं और युवा हो सकते हैं निर्णायक

माना जा रहा है कि 2023 के विधानसभा चुनाव में महिला और युवा मतदाता निर्णायक साबित हो सकते हैं। कहा जा रहा है कि इस चुनाव में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। युवा वोटर भी मतदान के लिए निकले। भाजपा और कांग्रेस दोनों ने महिलाओं के लिए लुभावने वादे किए हैं। विवाहित महिलाओं को भाजपा ने हर साल 12 हजार देने का वादा किया है, तो कांग्रेस ने 15 हजार रुपए सालाना देने का ऐलान किया है। कहते हैं रोजगार का मुद्दा युवाओं को झकझोरा है। लोग मानकर चल रहे हैं कि महिलाओं और युवाओं का वोट जिधर गिरा है,राज्य में उसी की सरकार बनने वाली है। जैसे 2018 में 2500 रुपए क्विंटल में धान खरीदी मुद्दे पर किसान कांग्रेस के साथ हो लिए थे और भारी बहुमत से उसकी सरकार बन गई थी।

बहुमत का कांटा अटकेगा 50-52 पर

माना जा रहा है कि 2023 में जिसकी भी सरकार बने, उसे 50-52 से ज्यादा सीटें नहीं मिलने वाली है। इस बार कांग्रेस और भाजपा के बीच कांटे का मुकाबला दिखा। कुछ सीटों पर ही त्रिकोणीय मुकाबले जैसी स्थिति रही। एक-दो जगह बसपा ने त्रिकोणीय मुकाबला बनाया, तो एक-दो जगह जोगी कांग्रेस ने। एकाध जगह निर्दलीय प्रत्याशियों ने भी मुकाबले को रोचक बनाया है। कहा जा रहा है मतदान के रुख को देखकर नहीं लग रहा है कि इस बार किसी दल को एकतरफा सीटें मिलेंगी। वैसे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल 75 सीटों पर जीत का दावा कर रहे हैं तो भाजपा 55 सीटें मिलने की उम्मीद कर रही है।

भारी उलटफेर की अटकलें

कहा जा रहा है कि 2023 के विधानसभा चुनाव में भारी उलटफेर होने वाला है। कई दिग्गजों की नाव डूब सकती है तो कई नए-नवेले चेहरे चमक सकते हैं। कांग्रेस ने एंटी इंकम्बैंसी फैक्टर को कम करने के लिए अपने 22 विधायकों की जगह नए लोगों को उतारा है,पर मंत्रियों और विधानसभा अध्यक्ष-उपाध्यक्ष को नहीं छेड़ा है। भाजपा ने एक विधायक की जगह नए चेहरा को लड़ाया है, लेकिन दिग्गजों को मुकाबले में रखा है। 2018 में हारे लोग भी इस बार खिलाड़ी हैं। भाजपा ने कई अनजान चेहरे पर भी दांव लगाया है। मतदाताओं के रुख से लोग अंदाजा लगा रहे हैं कि इस बार भारी चौंकाने वाले नतीजे आ सकते हैं।